अपार पार ताहि कौन पावई। नारद गणेश शेष शारद महेश व्यास थकित बखानि वेद नेति कै बतावई॥ तदपि स्वबुद्धि मैं सुसज्जन करत गान अमित बिचारि हीय भजन प्रभावई। भाग्यवन्त करन सफल हेतु बानि आपुमति अनुरूप त्योंहिं राम यश गावई॥ सवैया॥ यह रामचरित्र पवित्र महा नर गावहिं जे नित नेमलिये। गुण ज्ञान विराग क्षमादि सबै निबसैं हरिभक्ति सुआनि हिये॥ कतहूं नहिं लेश कलेश लहैं बिचरैं धरनी हरि प्रेम पिये। भगवन्त सदा सियराम तिन्हें बसुयामरहें सुख क्षेम किये॥

दो० श्रीगुरु कृपासुपाय बल अल्प बुद्धि भगवन्त।
बालकाण्ड बरण्यो कछुक हरियश अमित अनन्त॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रन्थे बालकाण्डसमाप्तिवर्णनोनामपंचदशोऽध्यायः १५॥

इति बालकांड समाप्तम्

भक्तिशिरोमणि अयोध्याकाण्ड

छप्पै ॥ सिद्धिसदन शोभाढ्य कदन दुखदोष अपारं । अद्रिजात्मजवेश्मि सुगुण विघ्नौघ निवारं ॥ शुद्ध सुधी वरदानि शुभ्र नागास्य विशालं । नित्यानंद गणाधिप भजतारति जनदालं ॥ कृत सुमनस नरनागादिसब शारंगांघ्रि बंदनसतत । भगवंतसपुट कर नाय शिर मन बच क्रम गणपति नमत ॥ सवैया ॥ समश्यामल अम्बु धराभतनुं पटपीत धृतामल जालद्युतौ । शिखरेन्दु त क्रीटतमीश मुखं धृतपाणि शिलीमुख चापयुतौ ॥ जनकात्मजसा करुणाम्बुनिधे मररक्षनितावध नाथसुतौ । ममानस मासु निवास करौ भगवंत सदा जलजांघ्रिनुतौ ॥

दो० श्री गुरु पद पाथोज रज शिर धरि नयन लगाय ।
सीयराम पावन सुयश कहौं सो मतिसम गाय ॥
जबते राम बिवाहि घर आये कोशलराय ।
तब ते मुदमंगल अवध नितनूतन सरसाय ॥
कोशलपाल कृपाल को भाग बखानै कौन ।
वेद तत्त्व पुरुषोत्तमहि करि पाये सुत जौन ॥
कोशलपुर नर नारि सब निरखि राममुख चंद ।
सुकृत सुभाग सराहि निज लहहिं परम आनंद ॥
केकै नृप सुत बारयक नाम युधाजित जासु ।
अवध आय नृपसन विनय कीन्हे सहितहुलासु ॥

करि बहु बिनय जोरि युगपानी । सहित प्रीति पुनि कहमृदुबानी ॥
नाथ हमारे पुर चहुँ पासा । करत अहैं बहु दुष्ट निवासा ॥

परम सबल ते जीति न जावें। तिन ते हमसब अति दुखपावें॥
त्यहि हित आयन याचन तुमहीं। देहु भरत रिपुसूदन हमहीं॥
ते चलि सकल दुष्ट संहारें। हम सबकर दुख दुसह निवारें॥
तुम नृप सकल लोक हितकारी। धर्म धुरीण दीन दुख हारी॥
जानि सभीत कृपा अब कीजे। दीजे सुवन सुयश जगलीजे॥
मुनिहु बहुत बिधि नृपहिबुझाये। तबनृप सादर सुवन बुलाये॥

॥ दो० सादर सुवन बुलाय तब दीन्ह्यों भूप रजाय।
सुनत भरत रिपुहन मुदित चले नृपहि शिरनाय॥

पितु पदबंदि बहुरि दोउ भाई। रामचरण पंकज शिरनाई॥
प्रभुसन बिदा पाय दोउभ्राता। बंदि मातु गुरुपद जलजाता॥
चले सुभट सेना सँग लीन्हे। प्रभुपद कमल मधुपमनकीन्हे॥
यहि बिधि भरत समेत सहाई। केकै नृपपुर पहुँचे जाई॥
भूप आय आगे लै लीन्हा। भवनआनि अतिआदरकीन्हा॥
पुनि नृप द्विजन बोलिअनुरागे। सादर यज्ञकरन तहँ लागे॥
सुनि खरमुख लै सैनसमूहा। आयउ धाइ तहां करि हूहा॥
भरत समर सब असुर सँहारे। बिगत त्रास सब भये सुखारे॥

दो० तब तहँ पुनि सानुज भरत लखि सनेह अधिकार।
लगे रहन मातुल भवन बाढ़ी प्रीति अपार॥

यह कछु चरित कहा मैं गाई। अपर कथा अब सुनहु सुहाई॥
कोशलपुर यकबार सुभाये। बिधि सँदेश लै नारद आये॥
अति हित रामचरित जिन केरे। राम प्रेम भाजन मुनि हेरे॥
मुनिहि बिलोकि मुदित रघुनाथा। उठि करजोरि चरण धरिमाथा॥
दीन अशीश हरषि मुनि राई। प्रभु आसन बैठारिन्हि लाई॥
बिबिधभांति पुनि पूजन करिकै। बोले रामचरणं शिर धरिकै॥

क्यहि कारण आगमन कृपाला। कहहु मुनीश वरणि सो हाला॥
सुनि प्रभुवचन मुदित मुनिराईं। विधिसँदेश कहि सकलसुनाई॥
दो० दशकन्धर अतिकृत अनृत त्यहिभय दुखित त्रिलोक।
शीघ्रसदल खलमारि प्रभु करिये सबहि विशोक॥
सुनत वचन बोले रघुवीरा। ऐसइ करब झटित मुनिधीरा॥
सत्यसन्ध मुनि रामहि जानी। दृढ़ विश्वास हृदै निजआनी॥
पुनि नारद विधिलोक सिधाये। रामस्वमाया प्रकटि जनाये॥
अस अभिलाष भयउ सबकाहू। आपु अछत सानँद नरनाहू॥
देहिं रामकहँ करि युवराजू। होहि सफल सवकरसुखसाजू॥
यहिविधि सकल अवध नर नारी। सादर कहहिं मनाय पुरारी॥
कृपासिन्धु शिव अवढर दानी। पुरवहु आस दास निजजानी॥
भूप हृदय मति प्रेरहु तैसी। हम सबहिन उर निवसी जैसी॥
दो० रामराजसम स्वातिजल चातक पुर नर नारि।
तृषित सपदि पावनचहत त्यहिबिनु निपटदुखारि॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितायांभक्तिशिरोमणिग्रन्थे भरतशत्रुघ्ननन्योरेगमननारदआगमन विधिसंदेशश्रीरामप्रतिकथन वर्णनोनामप्रथमोऽध्यायः १॥

दो० बन्दनकरि सिय रामपद बारबार शिरनाय।
कहौं कथा पावनकरणि जो सुनि कलुष नशाय॥

चकोरछन्द॥ एकसमै ससमाज सबै सुखराजत राजसभा अवधेश। आरसिराय सुभाय लिये कर कानसमीप लख्यो सितकेश॥ मानहु सो पन चौथअहै लगि कानरह्यो करियों उपदेश। जीवन को फल लेहुन क्यों रघुनाथहि दै युवराज नरेश॥ कवित्त॥ सोई मनआनि भूप हीकरि विचार चारु चैत्रकृष्ण वार गुरु तृतियासु पायकै। परम प्रमोद प्रेम पुलक प्रफुल्लगात सानँद महीपसद्य

भौन गुरुजायकै ॥ जोरि पाणि सादर नवाय पदपद्ममाथ बारबार जोहि मुख चन्दवृन्द चायकै। भाग्यवन्त भूप आपु अन्तर विचार जोपि भाखत वशिष्ठ सो वचन मनकायकै ॥ नाथ रामचन्द्र भये लायक सकल काज नीतिधर्म वीरतादि पूरण उदारहैं । आपुसम छोह सब राखत संततनाथ रामपै सुविप्रवृन्द सास्वपरिवारहैं ॥ सेवक समाज सब सचिव नगरलोग शत्रु मित्र वर्गयत्र यावत हमारहैं। मोहिंसम रामसब काहूको लगत प्रीव रांवरे अशीश जनु सोही तनुधारहैं ॥

दो० नाथकृपा तव दासके भये सिद्ध सबकाज।
अब अभिलाषा एक उर है मेरे मुनिराज ॥
राजतिलक रघुनाथ कहँ करिय जु आयसु होय।
हमहिं अछत आनन्द यह ज्यहिदेखै सबकोय ॥
जियन मरणकर शोच पुनि रहैन मोमन माहि।
प्रभुप्रसाद अभिलाष यह जो पूरण ह्वै जाहि ॥

सुनि नृपवचन कह्यउ मुनिराजू। करियन बिलँब सजियसबसाजू॥
मंगलमोद सुदिन सब तवहीं। रामराज बैठहिं नृप जबहीं ॥
जानि न जाय ईशगति राई। त्यहिहितकरि निश्चयनहिंगाई॥
तब महिपाल भवन निजआये। बोलि सुमन्त सुबचन सुनाये ॥
वेगिसजहु अभिषेक समाजू। रामहि करनचहौं युवराजू ॥
भूपवचन सबके मनभाये। मनहु रंक मणि पारस पाये ॥
जयजय करि मुनि आयसुपाई। सेवक सचिव चले सबधाई ॥
जल दल चंदन अक्षत फूला। पान पुंगफल औषधि मूला ॥
औरहु जो मुनि नाम गनाये। खोजि सु बस्तु सचिवसबलाये ॥
मंगल मे सब नगर सजाये। विपुलवितानविविधविधिछाये ॥

ध्वज पताक तोरण बहु सोहैं। गज मणि मै चौकें मन मोहैं॥
बाजहिं अमित सुमंगल बाजा। बरणि न जाइ नगरकर साजा॥
रोलाछंद॥ कन्या तोरण चौक कलश बर बिप्र समाजे। बंदन वार पताक केतु ध्वज चमर बिराजे॥ नृत्यगान बरवाद्य दूब दध्यक्षत हरदी। धूप दीप फल फूल सूत मागध अरु बंदी॥ वेद नाद समान्न सुरभि रम्भारसि चित्रम्। अंकुर रोपण पान व्यजन पल्लव घृत छत्रम्॥ चतुरंगिणी सुसेन बारमुख्यारुवितााना। मंगलांग चालीस नाम इति वेद बखाना॥

दो० ये सब मंगल अवध पुर साजे सबहि बनाय।
शोभाअमित बिलोकिज्यहि अमरावती लजाय॥

मुदित सकलपुर लोग लुगाई। जहँ तहँ नृपके करहिं बड़ाई॥
धन्य भूप सुकृती जग चीन्हा। लोचनलाभसबहिजिनदीन्हा॥
यहि विधि अवध महानँद होई। बरणि न जाइ एक मुख सोई॥
होहिं सगुण शुभ सिय रघुबीरै। कहहिं सप्रेम बचन धरिधीरै॥
भरत सबन्धु मनहुँ पुर आवत। असम्बहिंशकुनप्रभावजनावत॥
मोहिं भरत प्रिय प्राण समाना। मिलनचहतअस शकुनबखाना॥

दो० इहां मुनिहि नृप बोलिकै पठये रघुपति ऐन।
नेम क्रिया ब्रत धर्म्म सब सादर प्रभु शिख दैन॥

सवैया॥ मुनि राजहि आवत रामसुने उठि द्वारहि आनि प्रणाम किये। दय अर्घ सआदर आनि निलै करि पूजन आसन दिव्य दिये॥ करजोरि बहोरि ससीय बिनै करि पूछत पूरण प्रेम हिये। क्यहि कारण स्वामि पयान किये गृह सेवक भूरि कृपाहि लिये॥ मंदिर सेवक आगम स्वामिं सुमंगल मूल अमंगलहारी। यद्यपि नाथ उचितरहै अस प्रीति समेत स्वदास हँकारी॥ सौंपिय

काज य नीति कही प्रभुता तजि पै प्रभुनेह सँभारी। सो भगवन्त पुनीत भयो गृह सेवक आजु सुभाग्य हमारी॥

दो॰ होय जु आयसु नाथ तव बेगि करौं स्वइ काज।
शुचि सनेह साने बचन सुनि बोले मुनिराज॥

सवैया॥ राउ सज्यो अभिषेक समाज सु चाहत देन तुम्हें युव राजू। ताहित मोहिं इतै पठये रघुनायक देन तुम्हें शिखराजू॥ सो सिय संयुत रामकरौ ब्रतनेम क्रियादिक संयम आजू। जो भगवंत प्रभात करै कुशलात विरञ्चि निबाहन काजू॥

दो॰ यहि प्रकार गुरु शीखदै गये राउके गेह।
शीलसिंधु रघुबरहृदै भयो अधिक संदेह॥

सवैया॥ जन्म लिये सब बंधु यकैसँग भोजन केलि सुबाल पनेकू। कर्ण सुवेध भयो उपवीत बिवाहन संग उमंग अनेकू॥ पावन हंस य बंश बिषे अनुचित्त सु होत अहै यह येकू। ते प्रिय बन्धु बराय कियो अब चाहत भूप बड़े अभिषेकू॥

दो॰ इति सप्रेम पछितानि प्रभु हरणि भक्त मन बंक।
लषणलाल आये तबहिं सानँद सहज अशंक॥
प्रेम सँपुट करि पानि युग नाये पद रज भाल।
अति आदर राखे निकट रघुपति राम कृपाल॥

तोटकछंद॥ पुर बाजि निशान रहे बहुते। अति आनँद जात न मो कहुते॥ घर बाट सहाट अथाइनमें। चरचा इमिलोग लुगाइन में॥ वह लग्न सुमंगल मूलकबै। पुजिहै विधि मो अभिलाष जबै॥ पुरटाद्भुत मंजु सिंहासनपै। करुणाकरि भूरि स्वदासनपै॥ बैठे सिय संयुतराम जबै। सब पूरमनोरथ होइ तबै॥ भरतागम सर्वमनाय कहैं। फल लोचनते इत आयलहैं॥ यहिभाँति प्रमोद सुद्धायर-

ह्यो। भगवन्त मुखेक न जायकह्यो॥छप्पै॥ रामराज पुरसाज निरखि देवन मनशोचे। को हरिहै दुखजाल शमनकरिहै खलपोचे॥ चाहतहोन अकाज अवशिमन मंत्र दृढ़ाई। शारद सुमिरि सप्रेम बोलि बहु विनय सुनाई॥ करि विनय कहत पुनि पुनि अमर मातु करहु स्वइजतन अब। बनजाहिंराम तजिराज ज्यहिं होइ सिद्धि सुरकाज सब॥ देव विनय सुनि देवि शोचमन कृत अधिकारी। कोशलपुर सरपञ्चविपिन मोदित नरनारी॥ तिनहिं देनदुख हेतुभइउं मैं हिमि मैं राती। इति अपराध विचारि देवि मनमें पछिताती॥ लखि कहत देव करजोरि पुनि मातु तुमहिं कछु खोरि नहिं। प्रभु रहित हरष बिसमै स्वबश जानहु तुम सब विधि उनहिं॥ कवित्त॥ धृग धृग देवन बखानि देविचली आपु आगिल बिचारि काज मोद मन धारिकै। आई औध मध्य जहाँ रानिन निवास चारु दीख सबभाँति बुद्धि पौरुष सँभारिकै॥ पायो न प्रवेश तत्र बैठि फेरि कंठ आनि मंथरा कि चेरि पीव केकई बिचारिकै। दीनफेरि तासुमति शारदा प्रवीन बुद्धि दानि दुख पुंज ताहि अयश प्यारिकै॥

दो० यह बैरोचन कन्यका रही परम बलवान।
मारे त्यहिं सुरपतिस्वकर लहिआयसु भगवान॥
इति विरोध राखेहृदय चाहत प्रगटन सोय।
यह सत्योपाख्यानमें विदित कथा नहिं गोय॥

सवैया॥ चेरिलख्यो पुर मङ्गलसाज सुवाज बधाव अनन्त उछाहे। पूछिसि लोगन मोद कहा सुनिराम सुराज भयो उरदाहे॥ नीच कुबुद्धि बिचारकरै किमिरातिहि होइ अकाज महाहे। ज्यों मधुलागि बिलोकत भिल्लिनि ताकति गौं त्यहिं लेन सुचाहे॥

दो० यहिविधि करत बिचार मन भरतमातु पहँजाय।

नैनसजल व्याकुल बिलखि बोली बचन बनाय ॥
जो स्वामिनि मानहु फुरबानी। तौ कछुकहौं तुमहिं हितजानी॥
मोहिंशोच उर भयो अपारा। निरखि नअनभलजायतुम्हारा॥
त्यहिते बिनुपूछे कछुबाता। कहौं निरखि तवकाज नशाता॥
जो जाकर हितहोय विशेखी। सो ताकर दुख संकत न देखी॥
अनहित तासु होत जो जानै। पूछेहु बिन है निडर बखानै॥
एते ठौर स्वामि सों दासा। बिनु पूछे बच करै प्रकासा॥

छप्पै ॥ सर्प त्राश जितु होय शत्रु शिरपर चढ़ि आवै। अस्त्रा-दिक लखि निकट देत विष प्रभुहिं जनावै ॥ मारुताग्नि भय होय दुखद मग कंटक जानी। पथ्यापथ्य अहार दानि दुख लाभरुहानी॥ इति ठवर दास पूछेहु बिना कहै स्वामि रुक्पायके। नहिं लगत ताहि पातक तनक कहत इमपि श्रुति गायकै॥ गीतिकाछंद॥ उतपात यक सुनि ससुझि भामिनि मोहिं मनअति दुखभयो। अ-भिषेक होइहि काल्हि रामहिं रानि नृप असमत ठयो॥ परदेश प-ठये सुवन तुम्हरे सून लखि इत यहकियो। सो सुखद सबकहँ तुमहिं भरतहिं शोकसुठि चाहतदियो॥

दो० ताते मैं पूंछे बिना कीन्हे तुमहिं जनाव।
कौशल्याहित रावरे कीन सुकठिन उपाव॥

कौशल्याहित रौरेहिं लागी। बिपति बीज बोयो अनुरागी॥
भूप हृदय ऋतुपावस पाई। राजमनोर्थ सघन जलदाई॥
आयसुबारि अवध थल चारू। पुत्रराज्य बलपाय अपारू॥
बिपतिबीज तुम लगि उन बयऊ। पायसहाय सुजामत भयऊ॥
चारिदिवस बीते सुनु रानी। बिपति हाल परिहै तुव जानी॥
सुनत चेरि बानी कैकेई। जानि मलिन मन उत्तर देई॥

कहसिकहा घर फोरनि बानी। रामराज ममहोइ न हानी॥
रामभरत म्वहिं प्रिय सम दोऊ। भलम्वहिं रामराज जोहोऊ॥
रामहिं राज काल्हि जो होई। देहौं त्वहिं मनभाइहि जोई॥
कौशल्यासम रघुपति मोहीं। जानत चेरि कहौं ध्रुव तोहीं॥
तदपि प्रीति राखत बहु मोते। कहत न उनहिं काजम्वहिंहोते॥
ऐसे सुतहि तिलकतें होते। कुमति कुचालि उपद्रव जोते॥

दो॰ जो देवै विधिजन्ममें जन्मभूरि करिछोह।
तौ देवै सियराम सम सुन्दर पूत पतोह॥

ताते सत्यकहसि किन मोहीं। कवनहेतु उपजा दुख तोहीं॥
बोली चेरि वचन मनमारी। तुमहिं नहीं परतीत हमारी॥
निरखि तुम्हार अहित मैं माई। साँचिबात कहि तुमहिं जनाई॥
सोरौरेहि नहिं तनक सुहान्यो। घर फोरनिकहि मोहिं बखान्यो॥
त्यहिते बहुरि कही अबकाहा। पायनफल कहिजसकछुचाहा॥
हमहिं नहीं कछु लाभ न हानी। तव दुख निरखि कहा मैं रानी॥
तुम जो कहहु राम प्रिय मोही। सो सब सत्यझूठ नहिं ओही॥
पर यह बात जान सबकोई। असमय परे सुहृद रिपुहोई॥

सवैया॥ पङ्कजको पितु बारिधहै विष चन्द्रसुधा ज्यहि बन्धुसगोई। मित्रप्रियारबिलच्यनु जासु विरञ्चि तनै हारि हैं बहनोई॥ यों परिवार भरो ज्यहिको न सहायक कै हिमिजारत सोई। त्यों भगवन्त विचारि कहै सुविपत्ति परे नहिं काहुक कोई॥ हैं जबलौं दिन आपभले तबलौं हितहै सकलौ अपनोई। देव अदेव प्रसन्नसबै नहिं तौसन आपन तौ हितहोई॥ ते दिन ज्यों बिपरीत भये बिपरीत भये तुरतै हितसोई। त्यों भगवन्त बिचारि कहै सु विपत्ति परे नहिं काहुक कोई॥ बास अकाश प्रकाश महा निशि नायक दायक

शीतल जोई। कल्पद्रुमानुज काम दुहा भगनी प्रिय आपु सुधाधर सोई॥ यों बिधु राहुग्रसै जब आनि सहायक तासु न कै तब होई। त्यों भगवन्त बिचारि कहै सु विपत्ति परे नहिं काहुक कोई॥ कानन अग्नि प्रचंड दहै तब मारुत तासु सहायक होई। दीप शिखै कृश पेखि महालघु जानि बुझावत है त्यहि सोई॥ है यह संतत रीतिहुवै रिपु निर्बल मैं निज मित्रहु जोई। त्यों भगवन्त बिचारि कहै सु विपत्ति परे नहिं काहुक कोई॥ श्री मणि रम्भ हलाहल शंख अमी गजराज सुधाधर जोई। चाप धन्वंतर काम दुहा कल्पद्रुम बाजि सुराष्ट पटोई॥ रत्न दिये सरिनायक जो त्यहिं गाढ़ सहाय भयो नहिं कोई। त्यों भगवन्त बिचारि कहै सु विपत्तिम काहुक कोउ न होई॥

दो॰ बिपति परे काहुक कऊ होत नहीं संसार।
सुदिन जानि ताते अबहिं कीजे काज सँभार॥

सवैया॥ नाह सनेह त्वयाजर चाहत पुत्रहिकै नृप सौति उखारन। रूँधहु बारि बनाय घनी त्यहि राजसुतै करि लावहु बारन॥ शोच सुहाग बलै न तुम्हैं करती कछुहौ निज काज सँभारन। शुद्ध सुभाव लखौ तुम क्यों मुख मीठ हिये हित तौ भरतारन॥ राम कि मातु प्रवीण बड़ी लहि बीचलिये निजकाज बनाई। रामहिं मातुमतो इतिजानब जो भरतै उत भूप पठाई॥ भूपहि प्रीति विशेषितुम्हैं पर सौति सुभाव सकै न लखाई। साजि प्रपंच नृपै बशकै सुतराज हितै उन लग्न धराई॥ सेवहिं सौति भले सब मोकहँ राखत कोउ अभावनजीके। गर्ब लिये निज हीयरहै यक भर्त्त कि मातु सदै बलपीके॥ है कौशल्यहि शाल तुम्हार कपट्ट प्रवीण खुलै नाहिंनीके। सोइ उपाव कियो हितराउर डारहिं सो विधि शीशै वहीके॥ यद्यपि

राज उचित्त अहै यहि बंश बिषे रघुनंदनहीको। भावतहै सबकोय मतो अरु लागत मोहिंरहै सुठि नीको॥ पै यहि आगिलबात बिचारि भयो दुखदाह महा ममहीको। सो दुख देउ बिरश्चि उन्हैं अनहित्त तक्यो ज़िन राउरजीको॥

यहिविधि कहि कहि बचनबनाई। दिहिसि कुटिलपनहृदयदृढ़ाई॥
बहु सवतिनकी कथा बखानी। ज्यहि सुनि बैर बढ़ै उररानी॥
चित्रकेतु नृप ज्यहि जग जानी। षोडश सहस रहीं त्यहिं रानी॥
मुनि अङ्गिरा नृपहि यकबारा। मुक्तिहेतु शिख दीन्हें अपारा॥
पुत्रहीन नृप कीन न काना। तबमुनि हृदयअधिकदुखमाना॥
नारद मुनिसन जाय सुनाये। बहुरि देन बर द्वउजन आये॥
भूपहिं बर दीन्हे हरषाई। होइहि पुत्र तुम्हारे राई॥
दयबर द्वउ मुनि आश्रम गयऊ। लघुरानी सुत जन्मत भयऊ॥
पुनि नारद तहँ जाय सुभाये। रानिन अपर बहुत समझाये॥
तुमहिं न दीन पुत्र करतारा। लघुरानिहिं होइहि सुखसारा॥
सुनि तिन घात पाइ इकबारा। बिषदै डारिनि मारि कुमारा॥
नृप रानिहिं दुख भयो कलापा। पुनि नारद आये तहँ आपा॥
पुत्रहि जाय दीन बोलकारी। हरषे निरखि पिता महँतारी॥
कहेउ सुवन स्वइ बचन अनूपा। हम पंचाल देशके भूपा॥
राजछोड़ि कानन तपकाजा। गयनरही तहँ तापस साजा॥
भिक्षाकरि यकबार सुभाये। यक स्त्रीके द्वारे आये॥
त्यहिसन कंडा माँगि बनावा। भोजन हरिहि अर्पि मैं पावा॥
उन कंडनमें चींटी रहेऊ। सोरहसहस सकलते दहेऊ॥
भईं आइ ते सब नृपरानी। कंडादीन हमहिं जो आनी॥
सो भइआइ हमारी माता। पायनअशन अर्पि जगत्राता॥

त्यहिते एकहि जन्ममभ्कारा। गयउ हमार होइ उद्धारा॥
सोरहसहस जन्म नतु मोहीं। धरनपरत धरणी अघबोहीं॥
ताते को काको सुत आहै। सुनि इति भयो ज्ञान नरनाहै॥
तजि सबगयो विपिनहरिशरना। चित्रकेतु इतिहासय बरना॥
नृप उत्तानपाद जगजानी। सुरचि सुनीति रहीं द्वै रानी॥
उत्तम नाम सुरुचि सुत जाई। ध्रुव सुनीति जन्मी सुखदाई॥
सुरुचि नृपहि प्रिय रहै बिशेखी। सवति सुखहि सो सकै न देखी॥
एकबार ध्रुव गोद भँझारा। लिये नृपति सो सुरुचि निहारा॥
ध्रुवहि दिहिसि उतराइ दुराई। कहि कटु बचन बहुतखिसुवाई॥
तेहि गलानि ध्रुव बनहिं सिधाये। इति सुनीति दुख दारुणपाये॥
कद्रू बिनतहि दुख दिय भारी। ये दोऊ कश्यपकी नारी॥
कद्रू अहै अहिन के माता। बिनता सुवन गरुड़ बिख्याता॥
यक दिन दोऊ बाद बढ़ाई। कवनबरण कहिये निशिराई॥
कद्रू कह्यो श्याम बिधु होई। बिनता कह्यो श्वेत है सोई॥
तब दुनहुन मिलि बाजी लाई। हारै जो सो करै सेवकाई॥
कद्रू तब निज सुतन पठाई। ते सब लिहिनि घेरि शशिजाई॥
त्यहि तें श्याम परेउ सो देखी। बिनता गइ तब हारि बिशेखी॥
आपु भई रानी सों दासी। बहुतकाल लगि कीनखवासी॥
पुनि यकबार गरुड़ निजमाता। निरखिदुखितअतिशैकृशगाता॥
पूंछेउ मातु दुखित अति तोहीं। देखत हौं कहुकारण मोहीं॥
तब बिनता कहि कथा सुनाई। सुनत बचन बोले खगराई॥
अब ते बाद करहु फिरि माई। श्वेतशशी हम देब दिखाई॥
सुनि बिनता फिरि बादहिकीन्हा। खगपतिसकलभक्षिअहिलीन्हा॥
श्वेत बिलोकि परेउ तब चंदा। गयउ छूटि बिंनतहि दुखफंदा॥

होत सवति यहि बिधि दुखदाई । कहँलगिं कहौं सवतिकुटिलाई ॥
शरमिष्ठै दुख शुक्र कुमारी । दीन आपुभइँ पतिहिपियारी ॥
यहिबिधि बहु सवतिन के करणी । बारहि बार कुमति सो बरणी ॥
ज्यहि सुनि रानिहिं भा दुखगाढ़ा । सवति स्वभाउ बैरउर बाढ़ा ॥

शशीछंद ॥ सुनी तासुबानी । सुकैकेइरानी ॥ फिरीबुद्धितैसी । रही होनि जैसी ॥ कहै सौंह राखी । कहौं सत्य भाखी ॥ हुवै बात जैसी । सुनावो सुतैसी ॥

दो० कहै चेरि पुनि पुनि कहा पूछति हौ म्वहिं सोय ।
आपु हिताहित जानई पशु पक्षिहु सब कोय ॥
पाख दिवस बीते सजत रामतिलक को साजु ।
कह्यो न तुमसन सो कोऊ जान्यो मोसन आजु ॥

सवैया ॥ सत्यकहौं सुनु रानित्वया छलछांड़ि सबै करिकै त्रिधि शाखी । रामहिं काल्हि जु होइहि राज परी दुखजाल तुम्हैं लखि आँखी ॥ ह्वैहहि त्यों भगवन्त यहै दृढ़ रेख खचाय कहौं बलभाखी । पुत्र समेत कि सेवकरौ नतु ह्वैहहु भामिनि दूध कि माखी ॥

दो० कपट प्रवीनी कूबरी हरि इच्छा बलपाय ।
बचन धतूरा प्याय करि दीन्हेसि त्यहिं बौराय ॥

इतिश्रीमन्अयोध्यासिंहचर्मात्मजभगवन्तसिंहविरचितायांभक्तिशिरोमणिग्रंथे श्रीरामचन्द्रराजतिलकहेतुपुरमंगलसजनकैकेईप्रतिमंथराछलकथन वर्णनोनामद्वितीयोऽध्यायः २ ॥

सवैया ॥ शुभ अद्भुत जासु चरित्र सबै गुण गूढ़ महा श्रुति गान करौ । गति जानन योग न योगिनहू कल कीरतिजा दुख दोष हरौ ॥ भवफन्द निकन्दन आनँद कन्द सदा सुख वृन्द स्वछंद चरौ । करुणाकर स्वै सिय राघव के भगवन्त पदाब्जन माथधरौ ॥

कवित्त ॥ मानि सत्य बानि तासु केकई सु बुद्धिहीन पूँछती सप्रेम ताहि भाषुमो उपावरी । दाहिनी सु आँखि मोरि फर्कती सुभाय नित्य कीन ना जनाव तोहि याहि सो प्रभावरी ॥ मित्रही समान मैं सुजानती सबैनकीन ईरषाहि सौति काहि कीन सों कुदाँवरी । कौन लाग एकबार देवदीन शोक जाल लोक में हितू हमारि तू-हितौं लखावरी ॥ नैहरै मँझार जन्म काटबै बरुकजाय जीवतै न सेव मोहिं सौतिकी सुहोइहै । शत्रु बश्य राखिदैव ज्यावई जहान जाहि देवई सुसौतनीक जीवनो न सोइहै ॥ मोर तौ सुभाव सूध जानहूँ न शत्रु मित्र कौशिलाय मोहिं लागि कीन घात जोइहै । डारु ईश शीश ताहि खीसकै सुराज साज राख जो प्रतीत वाहि कृत्य योन कोइहै ॥

दो० यहिविधि भाषत केकई बचन अनेकन दीन ।
सुनि करि माया कूबरी बोली कपट प्रवीन ॥

बेगवतीछंद ॥ यहि भाँति कहा तुम भाखौ । बानि हमारि हिये धरि राखौ ॥ सुखमोद सुहाग तुम्हारो । दून दिनै उर धीरज धारो ॥ ज्यहिं आपु अकाज तकाहै । स्वै फल पावहिं गोय पकाहै ॥ जब ते तु अकाज सुनामैं । नींद न रैन न भूँख दिनामैं ॥ सवैया ॥ पूँछयउँमैं गुनि लोगन सों यह बात कही तिन रेखहिं खाँची । है-हहिं भर्त्त भुवाल सही परिहैं इति वाक्य कबौं नहिं काची ॥ सोय उपाउ करौ अब भामिनि मानि हिये मम बानि सुसाँची । है तुम्हरी बशभूप अबै त्यहिते करिलेहु न क्यों मनराँची ॥ छप्पै ॥ परौंकूप तव बचन सकौं पति पूतहि त्यागी । देखि मोर दुख कहसि करब काहेन हित लागी ॥ कैकेई बलि पशुहिं चेरिकर करि दृढ़ लीन्हीं । कपटरूप बरछूरि टेइ उर शिल खर कीन्हीं ॥ दुख अमित आय शि-

स्पर गयो रानि अयानि न इमि लखत। तृण हरित निरखि बलि पशु यथा धाय ललाकि ताको चखत॥ कुंडलिया॥ बानी तासु कठोरि अति अंत सुनत सुखदानि। ज्यों माखन मधु एकमें कुमति खवावति सानि॥ कुमति खववति सानि माखि पुरजन समुदाई। रामराज मधुरूप देव दुख रोग नहाई॥ माखन भरतहि राज मेलि कछु दीन्हेसि रानी। भइ बिधवाँ अधमरी मरे भूपति त्यहि बानी॥

दो० कह्यो चेरि रानी सुनहु भाषौं सरल उपाउ।
राख्यो कहि मोसन चहत द्वै बर तुम्हरे राउ॥

देवासुर संग्राम मँझारी। सम्बरादि दैत्यन सों भारी॥
इन्द्र सहाय करन के काजा। कीन समर तिन सन बहुराजा॥
तब तहँ घायल भयो नरेशू। देखि पतिहिं तुम बिबशकलेशू॥
हाँकिरथहिं निशि पतिहिंबचायो। मुरछा बिगत भूप सचुपायो॥
साहस निरखि तुम्हार भुवाला। दुइ बरदेन कहे त्यहि काल॥
सो थाती राख्यो ढिग राजा। लेब माँगि जब लागी काजा॥
स्वइबर आजु भूपसन लीजै। सुतहि राज रामहिं बनदीजै॥
दृढ़ अवलोकि कहब अतिआली। ज्यहि पुनि परै बचन नहिंखाली॥

गीतिकाछंद॥ जब राम जैहहिं विपिन पैहहिं भरत पुरराजहिं सही। तब तुमहिं होई सकल सुख अरु सवति उर यहिबिधि दही॥ सुनि बचन तासु प्रतीत आई मानि शिख लीन्ही स्वई। भगवन्त निवस्यो आय उर श्रीराम मन चाह्यो ज्वई॥

दो० दय आदर चेरिहि बहुत कोप भवन गइरानि।
डारी करि तन दुर्दशा देखि न जाय बखानि॥

भूषण पट सब धरिसि उतारी। छोरि बार दीन्हिसि लटझारी॥
सब तन महि रज लेपन कीन्हीं। फाटि पुरानि पहिरि पट लीन्हीं॥

भई कुरूप बरणि नहिं जाई। मनहुँ मृत्यु यमपुरते आई॥
भूप मरण की दशा बनाई। निश्चय नृप जिव हरि लै जाई॥
जो सुभाय सौभागिनि बामा। पतिब्रत धर्म निरत वसु यामा॥
सब तन किये शृंगार न रहई। घटै नाह आयू श्रुति कहई॥
यह तौ वेष विधँवकर धारी। सत्यहि पति निजडरि है मारी॥
त्यहिपर नीच शिखहि उरआनी। ह्वैहहि अवशि काज यहिहानी॥
दो० बीज बिपति केकइ कुमति महि ऋतु पावसचेरि।
छल जललहि अंकुरजम्यो बरदल फल दुखहेरि॥
छप्पै॥ का न करै बलवान कर्म क्यहि काल न खायो। काहि न ब्यापो क्रोध काहि नहिं मरुत डगायो॥ तृष्णा ताप न तप्यो कौन क्यहि मोह न बाँध्यो। को न भयो दुखदीन काहि शर मैन न साध्यो॥ क्यहि छल्यउ नाहिं युवतीतरल चिन्ताहिनि नहिं क्यहि डस्यो। भगवन्त विचारहु सुजनजन काहि न मानस मदवस्यो॥
कवित्त॥ कीन जो कुचाल रानि प्रगटन हाल औध आनँदअपार धूमधाम धाम छैरह्यो। बाजत निशान गान मंगल प्रचार जाल कौशलेश द्वारपै सुभीर भूरि ह्वैरह्यो॥ दुन्दुभीवजाय ब्योम गावत सुकीर्त्ति देव वर्षिकै प्रसून औनि मोदको सचैरह्यो। भाग्यवन्त होहि भूप रामवृन्द मोदरूप सर्वयाभिलाषहीयग्रामलोग कै रह्यो॥
दो० बालसखा सुनि मुदितमन मिलि दशपांच सप्रेम।
जाहिं निकट प्रभु आदरहिं पूँछि कुशल शुभक्षेम॥
पाय सुआयसु फिरहिं घर बहुविधि करत बड़ाइ।
माँगहिं वर यह जोरिकर मन शशिमौलि मनाइ॥
सवैया॥ हे हरहारक दास दुखै सुखसारक कारक पूरणकामै। मारन मारक धारक धर्म उधारक दीन दयागुणधामै॥ देहुयहै

भगवन्त हमैं वर जन्मलहौं ज्यहियोनि जहाँ भै । होहिं तहां हम सेवक स्वामि मिलैं सुखधाम सुजान श्रिरामै ॥ पालक नीति सुप्रीति सदै प्रणतारति भंजन अन्तरयामी । औढरदानि सुभाय द्रवो भवनाशकभौ भव शंकरनामी ॥ देहु यहै बर माँगतहैं भगवन्त सदा प्रभुतौ अनुगामी । जन्म जहाँ बश कर्मलहौं तहँ सेवकहौं रघुनायक स्वामी ॥

दो० यहिविधि मन अभिलाष सब करहिं समेत उछाहु ।
केकयसुताहि दाहुअति ज्यों निशिपति हित राहु ॥

सवैया ॥ जाय सुराज्य न नीति जहाँ यशजाय हिये बहुलोभहि आये । जाय सखासन शोचसबै कुलजाय नशाय सुविप्रसताये ॥ जाय विमोह सुज्ञानभये अघजाय हरीहरके गुणगाये । जाय यती वश कामअपी सुमती तिमिजाय कुसंगति पाये ॥ साँझसमै सउछाह हिये नृपगौनकिये प्रिय केकइऐना । कोपनिलै सुनि भूप सक्यो मन भै वश अग्र सुपाँउपरैना ॥ जावल वाहु अभैसुरराज नराधिप आयसु मेटिसकैना । सो सुनि कम्पितभो तिय क्रोध मनोजवली शरहै इमि पैना ॥

अस बलवान काम जगमाहीं । ज्यहिवश अनुचिताकियक्यहिनाहीं ॥
भूप ययाति दिलीपमहेशू । मुनि कौशिक सुरराजनिशेशू ॥
इनकै गति मनलखहु विचारी । कामविवश अनुचितकियभारी ॥
भूप ययाति कामवश लागी । युवाअवस्था सुतसन माँगी ॥
नृप दिलीपकी यकदिन रानी । कीन्ही ऋतुस्नान सयानी ॥
त्यहि रतिदान देनके काजा । जातरहे बश कन्द्रपराजा ॥
मिली कामसुरभी मगमाहीं । कीन प्रणाम प्रदक्षिण नाहीं ॥
कामविवश नृपख्याल न कीन्हा । कामधेनु तब शापहि दीन्हा ॥

दो० ताते नृपति दिलीपके भयो न सुत सुखदानि।
बहुत कालसेये सुरभि तब जन्मी सुतरानि॥
रूप मोहनी हरिको देखी। कामविवश शिवभयो विशेखी॥
धारनको धायो शशि भाला। बीज पतित ह्वैगो त्यहि काला॥
विश्वामित्र रहैं व्रत कीन्हे। करत तपस्या हरि मनु दीन्हे॥
तब तहँ एक अपसरा आई। निरखि कामवश भे मुनिराई॥
तासु संग मुनि भोगै लीन्हा। काम विवशं व्रत खंडन कीन्हा॥
इन्द्र अहल्यासन रति ठानी। भइँ भगसहससकलजगजानी॥
चन्द्र कलंक विश्व सब चीन्हा। सुरगुरुतियनिजतियकरिलीन्हा॥
को समर्थ अस त्रिभुवन माहीं। कामबाण ज्यहि वेध्यो नाहीं॥
धरि नृप धीर गयो जहँ रानी। देखि दशाभइ विथकित बानी॥
दो० अरुण नयन सूखे अधर पट पुरान महि शैन।
कुमतिहि फवत कुवेषजनु भइ बिधवाँ पतिहैन॥
तब ढिग जाइ पाणि गहि राजा। पूंछतरिस कीन्हेउ त्यहिकाजा॥
परसत पाणि अधिक रिस ठानी। दीन्हेउ झटकि पकरिकररानी॥
मनहुँ सक्रोध अहिनि विषभारी। विषम भाँतिरहि नृपहिं निहारी॥
मर्म स्थान भूप बपु डाटै। फन फनाय जनु चाहत काटै॥
द्वउ बरदान बासना जोई। रसना उभय भुवंगिनि सोई॥
दसन द्विवरगत तालू जोई। जासु डसे नहिं जीवन होई॥
सोवन सम अपर द्विज ताके। भरतराज विषडसे न जाके॥
पुनि नृप कहतबचन मृदु वोहीं। गजगामिनि कहुकारण मोहीं॥
दो० कवन हेतु कीन्हेउ रिसहि कहहु प्रियासो मोहिं।
अर्थ धर्म्म कामादिं फल मांगु देउँ सो तोहिं॥
नाराच छन्द॥ प्रिया अकाज ताक तोर कौनआजु जाहिको।

चढ़यो कराल काल शीश लेन चाह वाहिको ॥ कहौ करौं महीप काहि रंक भूप रंकही । जनाउ बेगि मोहिं सो विहाय तूहि शंकही ॥ सकौं सँहारि शत्रु सद्य होइ जो त्वयामरौ । कहाय तुच्छ पूर्ष बाम शंक जासु मैं धरौ ॥ सदै सुभाव मोरतैं प्रिया प्रवीन जानई । चकोर मोमनास्यतू निशेश ध्यान धारई ॥

अस बिचारि मन भावत प्यारी । माँगहु जो रुचि होइ तुम्हारी ॥
तजि रिस पट भूषणनि सवाँरहु । सुख अवसर कतदुखमनधारहु ॥
मैं प्रिय परम तुमहिं सुखलाई । राम तिलक शुभ घरी शुधाई ॥
सो सुनि अवध बधावन होई । भयो तोर मन भावत जोई ॥
सुनि नृप वचन प्रेम रसपागे । बाण समान कुमति उर लागे ॥
भइ अति पीर तदपि उरमाहीं । राखिसि गोइ जनायसि नाहीं ॥
ज्यों परकिया नारि परकंतै । निरत भयो बिछुरन दुख अंतै ॥
राखति गोइ न रोइ जनावै । कैकेई गति तिमि कबि गावै ॥

दो० भूप न पेख्यो तासुछल यद्यपि नीति निधान ।
नारिचरित बारिधि अगम गावतसुकबि सुजान ॥

करि कटाक्ष पुनि बचन बनाई । बोली कुटिल कुमति मुसकाई ॥
मांगु मांगु नित भाषत येहू । कबहुँ न कछू देहु नहिं लेहू ॥
द्वै बर देन कह्यो म्वहिं जोऊ । आजु लगे नहिं पायों सोऊ ॥
सुनित्यहिवचन कह्योमहिपाला । जान्यउँ प्रिया तोर मैं हाला ॥
याच्यो कबहिं दीन मैं नाहीं । नाहक क्रोध किह्यो मनमाहीं ॥
झूँठहि देहु प्रिया म्वहिं दोपू । दुइके चारि लेहु तजि रोपू ॥

सवैया ॥ कुलहंस प्रशंसप रीति सदैवरु संकट कोटि शरीरपरै । हितहोइ चहै हत द्रोहबढ़ै धनधाम छुटै बरु जीवहरै ॥ तजि स्वर्ग परै बरु नर्कजरै त्रयताप कलाप बिषाद भरै । भगवन्त अहै दृढ़टेक

यही मुख भाषि न सो फिरि बैनटरै॥ नहिं पातक आन असत्य यथा श्रुति शास्त्र पुराण बखानकरै। चहुकोटिक गुंजन ढेर करौ कबहूंपर सोन समाद्रि सरै॥ सब सुकृतमूल सुसत्यस्वई रघुवंश सबै दृढ़नेम धरै। भगवन्त विचारि प्रियालखुतैं बरु हंस हरै नहिं बैनटरै॥

सो० रामशपथ शतमोहिं मांगु देउँ भावतमनहिं।
कहौं सत्य प्रियतोहिं तजि रिस सजु भूषण बसन॥
यहिविधि बचन दृढ़ाय कुमति कुटिल बोलीबचन।
मनहुँ घात भलिपाय कपट बिहँग खोली कुलह॥

सवैया॥ राउ मनोरथ जोय हिए रघुनाथहि काल्हि करौं युवराजू। सो जनु कानन पावनहै सुख तासु मनोखग पुंजसमाजू॥ तापर केकइ भिल्लिनि चाहत छांड़न बैन भयंकर बाजू। ऐसि कठोर कुबुद्धि महा ज्यहि कीन सुखै दुख काज अकाजू॥

दो० प्रथम देहु बर एक यह मोहिं कृपाकरि आज।
यही समाज समेत पुर भरत होहिं युवराज॥
पुनि दूसर बर देहु यह ह्वै प्रसन्न म्वहिंराज।
बरष चतुर्दश बन बसहिं राम साजि मुनिसाज॥

सवैया॥ सुनि बैनगयो दलि भूपहियो जनु बज्र कि चोट सि घावकरी। मुख सूख सनीर विलोचन भे अतिब्याकुलतासुधि बुद्धि हरी॥ प्रगट्यो उर दारुण दाह लिये करमूंदि युगाक्षन शोचधरी। वह कौनकहै दुख भूपशिरै जनु आय अचानक गाजपरी॥ छप्पै॥ भूपहि विकल बिलोकि कुमति बोली कटुबैना। क्यहिकारण सुनि बचन लागि उर ज्यों शरपैना॥ देनकह्यो बरदान देहुकी भाषहु नाहीं। सत्यसंधता त्यागि अयश लीजे जगमाहीं॥ नृप सुवन

राम तब भरत नहिं जासु तिलक सुनि उरदहा। संभारि बचन बोल्योकसन प्रथम जु असमन छलरहा॥

दो० सत्यसंध बनि प्रथम म्वहिं देनकह्यो बरराज।
जान्यहु लेहै मांगि कहुँ चरबन मूठीनाज॥
सुनत कटुक बानीनृपति चितयो आंखि उघारि।
कुमति खड़ी आगेमनहुँ लिये क्रोध तरवारि॥

कवित्त॥ केकई कुबुद्धि मूठिधार निठुराई तासु कूबरी कुचालि तापै धरी खरसानहै। पेखि भूप कंपित कराल अनुमान मन सत्य कैकै सत्यकैधौं लेहै हठि प्रानहै॥ बोल्यो बैन सादर महीप मृदुमंजु उर धीरधरि मूरिकरि बज्रके समानहै। कहत कुभांति कस बचन प्रतीत प्रीति त्यागि बिनकाज मोहिं लावत तुफानहै॥ भरत सराम नैन मेरे युग मानु सत्य कपट न राखिमन कहौं सतिभावहै। रामही न लोभ राज भरतहि बोलि प्रात करौं युवराज आजु धारुमन चाव है॥ छोट बड़जानि मैं विचारि नृप नीतिकीन दीनमत कौशिला न मोहिं कछु कावहै। एकही बचन मोहिं लाग दुखजाल सुनि राम बनवास कीन कठिन कुघावहै॥ हरिपदछंद॥ तजि सब प्रिया रोष निज मनकी कहहुराम अपराधू। सबकउ कहत सराहत तुमहूं राम सहज सुठिसाधू॥ जिनकर शील सुभाव निरखि सुनि रहत अरिहु अनुकूला। ते रघुनाथ कवनविधि करते बचनमातु प्रतिकूला॥ जो प्रियहास किह्यो कछु होई तवतजि रोष कलापू। मांगु विचारि समुझि नहिं जाते परै दुसह संतापू॥ मणि बिनु फणिक मीन बिनु जलके जियै बरुक जगमाहीं। सत्यकहौं क्षणएक प्रियामैं जियों रामबिनु नाहीं॥

दो० अस विचारि मनसमुझि लखु वचनप्रिया परवीन।

कहौंसत्य छलछांड़ि मम जिवन राम आधीन॥
सुनत बचन मृदु कुमतिउर उठ्योक्रोध अधिकाय।
बरतअनल बाढ़त अधिक जिमिघृत आहुतिपाय॥
बोली बचन कुमति दुखदाई। करहु कोटि किन भूप उपाई॥
ये न बचन टरिहैं मम काऊ। मरौ आपु बरु उजरै गांऊ॥
भाजन अयश मोहिं बिधि करई। नाशै सुयश पाप शिर परई॥
शीतल चन्द्र स्रवै बरु आगी। होइ बरुक झख बारि बिरागी॥
तपत भानु बरु शीतल होई। जलनिधि होइ बिनाजलसोई॥
अन होनी इति होवहिं लाखा। टरहि न बचन जौन मैं भाखा॥
त्यहिते भूप समुझि मनमाहीं। आयसु देहु राम बन जाहीं॥
नतरु मरण मम अपयश तुमहीं। देखहुनृपतिसमुझि निजमनहीं॥
दो॰ असकहि उठि ठाढ़ी भई कुमति कुटिल दुख ऐन।
पकरि पाणि राखे निकट कह भूपति मृदु बैन॥
सवैया॥ प्राणप्रिया रबिबंशबनै जनि होसि बिखण्डन रूप कुठारी। मांगसि माथ दियों अबहीं करु राम बियोग न मीचु हमारी॥ राखहु राम रहैं घर ज्यों परि है पुनि तोहिं नतो दुखभारी। राम नहीं सुत कानन योग बिलोकु प्रिया मनमाहिं बिचारी॥
दो॰ बहुत बुझाये भूप त्यहिं सो न कान कछुकीन।
परेउ भूमि ब्याकुल नृपति राम राम रटिलीन॥
छप्पै॥ पुनि बोली कटु बचन कुमति कूपति दुखदाई। होहिं न दुइ यक संग बनब दानीकृपणाई॥ देनकह्यो जनि देहु कितौ धीरज उर धरिये। अबला इव बिनुकाज नृपति कारन कत करिये॥ तनु तनय धाम धन बाम महि सत्यसंध कहँ तृणसरिस। दयदान बहुरि माँगहु सु तजि लाजलोक बेदन महिस॥ सुनिबोल्यो नर-

नाह दोष कछु नाहिन तोहीं। लाग्यो मोह पिशाच काल मम लेइहि मोहीं॥ भरत सुधर्म निधान राज चाहत नहिं भोरे। मोहिं लागि दुख देन कुमति निवसी उर तोरे॥ त्यहिं विवश आजु हठ धारि तैं विपति बेलि बोयेकुमति। गति अगमनारि नहिंलखि परत कहत सत्य सज्जन सुमति॥ सवैया॥ ह्वैहँहिं राम गये कछु काल भुवाल बसी फिरि औध सुहाई। सादर बंधु सबै प्रभु के पदपंकजकी करिहैं सेवकाई॥ पैहँहिं मोद सबै भगवंत तिहूंपुर ह्वैहहि राम ब-ड़ाई। तोर कलंक मया पछिताव मिटी न मुयेहु कबौं नहिं जाई॥ कवित्त॥ ऐसही अनेकभांति भूपति बुझावताहि कुटिल कठोर कान कीन सो न लेश है। पर्यो धुनि माथ हाथ रटत सुराम राम विकल भुवाल विनु पंख ज्यों खगेश है॥ मनहिं मनाव विधि होय ना दिवसजाय कहै रघुनाथसन कोऊ य सँदेश है। याहीविधि शोचतभुवाल दुख दीनजाल विगत निशा यों बार उदित दिनेश है॥

दो० भूपद्वार आनँद परम बाजहिं विपुल निशान।
करहिं भाट गुणगान सुनि नृपहिं लगैं जनुबान॥
मंगल सकल नृपालही नहिं सुहात यहिभांति।
भूषण पटवनितहिं यथा मृतक स्वपति सँगजाति॥
कहहिं सुसेवक सचिवसब उदित विलोकि दिनेश।
भयो कवन कारण अबहिं जागे नहिं अवधेश॥

इति श्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवंतसिंहविरचिते भक्तिशिरोमणिग्रंथेकोपभवन कैकेयिवरदानदशरथकरुणावर्णनोनामतृतीयोऽध्यायः ३॥

बंदिराम सिय चरण सुहाये। जे हर मानस कमल दुराये॥
कहौं कथा भवसागर तरणी। पावनकरणि कलुषकलिहरणी॥
तब वशिष्ठ अनुशासन पाई। चले सुमंत जगावन राई॥

देखत भवन लाग भयकारो। अति डर सकत न करि पैठारी॥
धरि धीरज गृह कोप सिधाये। नृप गति देखि परम दुखपाये॥
पूंछि न सकहिं रहे चुपसाधी। बोली तब केकइ अपराधी॥
राजहिं नींद परी नहिं राती। बिलपत बिकल रहे यहिभांती॥
सो कारण मैंहूं नहिंजाना। रामराम रटि कीन बिहाना॥

दो॰ जाहु बेगि रघुनाथही लावहु इहां लिवाय।
समाचार सब भूपकर पूंछेउ फिरि तुम आय॥

सवैया॥ राजनहूं रुख जानिचले अनुमानि कुचाल करी कछु रानी। व्याकुल शोक सकै चलिना नृप रामहिं बोलि कहैं कसि बानी॥ शोचत भांति सुमंत यही पहुँचे जहँ राम तहांतर आनी। भूप रजाय सुनाय लिवाय चले सँग आतुर शारँगपानी॥ राम बिलोक्यउ जाइनृपै दुख दीनदशा नहिं जाय बखानी। सूखहिं ओठ जरै सब अंग भुवंग दुखी मणि भै जनुहानी॥ मीचुसमान निदान करैचह बैठिसरोष लख्यो ढिगरानी। धीरज धार हिये प्रभु मातहिं पूंछत सादर भे मृदुबानी॥ मातु कहौ दुखकारण तात करों स्वइबात जु होइ निवारन। है सब कारण रामयही तुम ऊपर राजहिं प्रीति अपारन॥ देनकह्यो बरदान हमैं युग मॉंग्यउँ सो सुनि शोच भुवारन। संकटधर्म पर्‍यो इतही उत छांड़ि सकोच सकैं सु तुम्हारन॥

दो॰ सत्यसंध रघुनाथ तुम पालक श्रुति मरयाद।
शिरधरि पितु आयसु करहु मेटहु विषम विषाद॥
निज करनी रघुनाथही कहेसि कुटिल सबगाय।
धर्मवान सुत सो बचन जो पालै पितुमाय॥
मातुबचन सुनि मुदितमन राम सहज सुखधाम।
अतिसनेह साने बचन बोले मृदु अभिराम॥

सवैया॥ जननी सुनु सो सुत भागबली जगपावन कीरति तासु छई। बचपालहि जो पितु मातु नितै धरिआयसु शीश अनंदमई॥ जननी पितु पोषणहार तनै जग दुर्लभ काहु विरञ्चिदई। भगवंत अनंद हमैं नितही बन आयसु जो पितु मातुभई॥ बड़काज अहै ममकानन में मिलिबो मुनिवृन्द विशेषितहां। पितु आयसु पालन धर्ममई जननी पुनि सम्मत तोर रहा॥ भगवंत सबैविधि सन्मुख आजु विरञ्चि दियो जस लाभचहा। बन ऐस्यहु काज न जाउँ गनी प्रथमैं म्वहिं मूढ़ समाज महा॥ शुद्धगाछंद॥ सुरौंका रूखजे त्यागी कुशाखी रएड को सेवैं। सुधाको छांड़ि कै मांगी बिषैसानंद जे लेवैं॥ त्यऊना पायकै ऐसो समै सुन्मातु चूकाहीं। मिलोहै आनि मो तैसो बिचारो माय मन्माहीं॥ हमारे शोच भो याही दुखारी देखिकै तातैं। सह्यो है क्लेश तन्माहीं जु थोरी लागिकै बातैं॥ भई है चूक मोसन्कै बड़ी सों जानि कै ताता। कहैना मोहिं सांची स्वै कहै तू सौंह मो माता॥

सुनि सनेह सानी प्रभुबानी। बोली कुटिल कपटपन ठानी॥
कारण अपर न कछु मैं जानी। भरत शपथ फुर कहौं बखानी॥
तुम सर्वज्ञ धर्मरत ताता। धर्म छांड़ि कछु करब न बाता॥
त्यहि ते पितुहित धीरज दीजे। उचित विचारि काज स्वइकीजै॥
गइ मुरछा नृप करवँट लीन्हा। रामागमन सचिव कहिदीन्हा॥
राम प्रणाम पितहि तब कीन्हा। अतिसनेह नृप भरि उरलीन्हा॥
कहि न जाय उर हरष अभंगू। मनहुँ गई मणि लह्यो भुवंगू॥
यकटक चितय रहे प्रभु ओरा। लोचन सजल प्रेम नहिं थोरा॥
तब रघुनाथ जोरि युगपाणी। पितु पद गहि बोले मृदुवाणी॥
मंगल समय शोचजनि कीजै। तात मुदित म्वहिं आयसुदीजै॥

याच्यो वर जननी जो ताता। सो सबभाँति हमहिं सुखदाता॥
धन्य सुवन जननी पितुबैना। पालहि मुदित सकल सुखऐना॥
करि प्रमाण जननी पितुबानी। चरणकमल पुनि देखबआनी॥
अवशि जाब मैं काननराई। माँगि मातुसन आयसु लाई॥

दो० असकहि रघुपति नाय शिर गवने मातु समीप।
प्रेम विवश नहिं दीन्ह कछु उतर भानुकुलदीप॥

रोलाछन्द॥ नगर व्यापिगइ बात सुनत सब लोग लुगाई। भये विकल हिमत्रास यथा सरसिज कुम्हिलाई॥ कहहिं कीन करतार कहा कछु जानि न जाई। दीन्हेसि निपट बिगारि बातसब प्रथम बनाई॥ कैकेइहि दैगारि विविधविधि दूषणदेहीं। सकल सुखहि दुखरूप कुमति डारिसि करिजेहीं॥ विप्रवधू कुलमान्य प्रिया जे केकइ केरी। लगीं देन सिखभूरिजाय चारौदिशि घेरी॥ सदा कहहु तुम मोहिं रामसम भरत न प्यारे। आजुभये क्यहिकाज राम रिपुसरिस तुम्हारे। जो पठवहु बन राम देहु दुख सबहि कलापू। तुमहु सहब परिणाम समुझि मनमें संतापू॥ जो जैहैं बन राम लषण सिय तजब न संगू। भरत न करिहैं राज काज सब होइहि भंगू॥ तुमहिं अयश अकलङ्क समुझि मन देखहु रानी॥ देहु भरत कहँ राज राम बन गय बड़ि हानी॥ नतरु रहैं गुरुगेह राम जनि बनहिं पठावो। करहु बेगि स्वइ बात जाहि दुख दुसह न पावो॥ तुमहिं कही सुनि काह समुझि मनमें सब लोगू। रामसरिस अभिराम सुवन काननके योगू॥ सवैया॥ ज्यहि भांतिन शोक कलङ्क नशाय उपायनकै कुल पालहि स्वै। हठि फेरसि रामहिं जात बनै जनि बातहि दूसरि चालसि कै॥ जिमि भानु बिना दिन प्राण बिना तनु चंद्र बिना जिमि यामिनि ज्वै।

तिमि औध बिना रघुनायकहै मन देखु बिचारि सुभामिनि त्वै॥

॥दो० बहुविधि सिखवन दीन तिन त्यहिं न कीन कछु कान।
नीच प्रबोधी नारि पुनि होनहार बलवान॥

॥ छप्पै ॥ राम जाय ढिग मातु चरणपंकज शिर नाये। निरखि बदन सुखधाम हरषि जननी उर लाये॥ दीन्ही मुदित अशीश बसन भूषण धन वारी। बारबार मुख चूमि पुलकि लोचन भरि वारी॥ लिय राखि गोद सविनोद पुनि स्रवत प्रेमरस पय थनहि। भगवन्त परम आनँद मनहुँ लहेउ रङ्क पदवी धनहिं॥ बोली तब मृदु बैन तात जननी बलिहारी। कहहु कबहि वह लग्न सकल मुद मंगलकारी॥ चाहत ज्यहि नरनारि कबहि सुख संकुल लूटी। सिंहासन सियसहित निरखि नखशिख छवि जूटी॥ सुख सुकृत मूल अघशूल हर तात सुमुख स्वइ उचरहु। बलि जाउँ न्हाय भगवंत कछु धरे मधुर भोजन करहु॥ तब जायहु पितु पाहिं बेर लालन बड़ि भैली। बोले सुनि मृदुबानि राम जननी सुख दैली॥ मातु दीन म्वहिं तात राज कानन सुखदाई। जहाँ मोर बड़काज देहु आयसु म्वहिं माई॥ ज्यहि कुशल जाय बन चारिदश बरष पालि पितु शासनहिं। पुनि आय पाँय देखब करहु मातु सुमनहि उदास नहिं॥ गीतिकाछंद॥ सुनि राम बैन बिनीत कोमल मातु उर शरसम लगे। गइ सहमि सूखि जवास जिमि परि बारि पावस मुद भगे॥ कहि जाय नहिं कछु हृदय दुखसुनि नाद केहरि मृगि यथा। तन कंप लोचन सजल दारुण दाह उर अन्तर मथा॥ शशिवदनाछंद॥ तब महतारी। धरि धृति भारी॥ गदगदबानी। रतिरस सानी॥ प्रभुतन देखी। कहत विशेखी॥ पितहि पियारे। तुम अधिकारे॥ निरखि तुम्हारे। चरित सुखारे॥ रहहिं हमेशा।

अवध नरेशा ॥ तिलकहि लागी। अति अनुरागी ॥ लगन शो-
धाई। सब सुखदाई ॥ क्यहि अपराधू। तुमसम साधू ॥ सुतहि
पियारे। बनहि निकारे ॥ कहहु निदानू। क्यहि कुलभानू ॥ भ-
यउ कृशानू। परम अयानू ॥ सुनि इति बानी। कह्यउ बखानी ॥
सचिव कुमारा। परम उदारा ॥ सकल हवाला। सुनत बिहाला ॥
भइ महतारी। अधिक दुखारी ॥ कढ़त न बानी। बिवरन रानी ॥

दो० राखि सकै नहिं कहि सकै राम बनहिं तुम जाहु।
दुबिधावश दारुण हृदय भा कौशल्यहि दाहु ॥

जो बन सुतहि जान नहिं देहूँ। बड़ अधर्म अरु फूटै गेहू ॥
पठवहुँ बनहिं राम क्यहि भांती। जिनहि निरखिजीवनदिनराती॥
पुनि मनमाहिं कीन अनुमाना। पतिब्रत धर्म परम बलवाना ॥
भरत राम सम भेद न कोई। म्वहिं भल भवन रहै सुत जोई ॥
धरि धीरज प्रभु बदन बिलोकी। बोली बचन नैन जल रोकी ॥
तात किहेउ भल जस कछु चाही। यहि सम धर्म अपर जग नाही॥
पिता बचन जो पालन करई। सो जनु सकल धर्म धुर धरई ॥
त्यहिते जाउ मुदित बन ताता। जो आयसु दीन्हेउ पितु माता ॥
मोहिं शोंच यक हृदय बिशेखी। अति सुकुमार गात तव देखी ॥
क्यहिविधि तात धीर म्वहिं आवै। पलकओट करि तुमहिं न जावै॥
जीवन प्राण लाल तुम मेरे। तुमबिन कछु न भाव म्वहिंभोरे ॥
ते तुम जाहु बनहिं अब रामा।क्यहिबिधिकटिहिदिवसममधामा॥
तात मातु कर नात बिचारी। कबहुँ न भूल्यहु सुरति हमारी ॥
परम अभागिनि मैं जग माहीं। देखउँ बैठि सुवन बन जाहीं ॥
बड़भागी कानन रघुराऊ। जहँ तुम जाहु त्यागि गृह गाँऊ॥
अवधि गये जो अवध न ऐहौ। तौ पुनि मोहिं जियत नहिं पैहौ॥

त्यहिते करेहु सोई सुखऐना। जियत सवहि देखहुँ ज्यहि नैना॥
अस कहि परी चरण गहि माता। मोरि सुरति जनि भूल्यहु ताता॥
पद॥ सुरतिजनि भूल्यो राजिव नैन। करुणासिंधु कृपापरिपूरण रूप शील गुण ऐन॥ पालक प्रीति रीति परमारथ विरद दीनहित पैन। मातु पिता परिजन धन जीवन सुहृद सुजन सुख दैन॥ करि अनाथ रघुनाथ जाहु वन छोरि सकल सुख चैन। म्वहिं समान अति नारि अभागिनि अपर जयो जगमें न॥ इमि भगवन्त कहत कौशल्या करत बनत कछु हैन। भरि आये रघुपति जल लोचन सुनत मधुर मृदु बैन॥
दो० जननिहि राम उठाय तब लाये हृदय सप्रीति।
समुझाये वहुभाँति सों कहि मृदु बचन विनीति॥
त्यहि अवसर रघुपति बनवासू। सुनि सियमन अतिभयउहरासू॥
व्याकुल परम सासु पहँ जाई। सादर चरण कमल शिर नाई॥
बैठि नमित शिर आशिष पाई। शोचत ह्दय प्रीति अधिकाई॥
प्राणनाथ बन चहत सिधावा। होइ संग क्यहि सुकृत प्रभावा॥
जो न साथ लेहैं भगवाना। तौ ताजि देह जाइहै प्राना॥
यहिबिधि शोचत अवनिकुमारी। नयन नलिन युग मोचंतिवारी॥
बोली मातु मधुर मृदु बैना। सुनहु बचन मम राजिवनैना॥
अति सुकुमारि तात बैदेही। प्राणते अधिक प्रिया सबकेही॥
सवैया॥ पुतरी दृगसो करि प्रीति बड़ी सिय राख्यउँ में निज प्राणन लाई। कल्पलता सम पालनकै बहु सींचि सनेह सुधा सुखदाई॥ फल फूल समय विधि वामभयो परिणाम कहा कछु जानि न जाई। बन जावन चाहत हैं सियसो अब आयसु होत कहा रघुराई॥ कबित्त॥ मातु कलगोद मंजु ललित हिंडोरनैसु अमित

विनोद कीन सीय बालपन में। भई है सयानि जब पलँग पुनीत सेज कोमल बिहाय पगधरी न धरन में॥ प्राणहू ते प्यारी मोहिं जनकदुलारी भूलि आयसु न दीन दीपबातिहू टरन में। भाग्य-वन्त चाहत सो सीयवन जान साथ आयसु है काह मोहिं शोच भूरि मन में॥

कानन कठिन परम दुखदाई। निशिचर करि केहरि समुदाई॥
फिरहिं बिलोकि धीर डरिजाहीं। सिय सुकुमारि योग वननाहीं॥
बिधुकर रसिक चकोरि कुमारी। रबिकरदिशिकिमिसकैनिहारी॥
कोल किरात भील तनुजाई। बिपिन हेतु विधि चतुर बनाई॥
सिय न सकी सहि वन दुखताता। बयकिशोरअति कोमलगाता॥
कहहु समुझि मन जस रघुराई। तस मैं सियहि कहौं समुझाई॥
मातु बचन सुनि प्रभु सुखमूला। बोले बचन समय अनुकूला॥

सवैया॥ राजकुमारि सिखावन मो सुनिये हित लागि कहौं जसचाही। आपन मोर चहौ भलजो मम बैन सुमानि रहौ गृह माही॥ सेयहु सादर सासु सबै तियधर्म्मपरे यहि सों जगनाही। भामिनि भौन भलो सबही विधि शोक लहैं पितु मातु न जाही॥

दो॰ करि पितुबचन प्रमाण मैं वेगि फिरब सुनुसीय।
बार न लागिहि जातदिन धरहु सीख ममहीय॥

रोलाछंद॥ विपिन महा दुखदानि निरखि लागत भयभारी। व्याघ्र सिंह वृक व्याल फिरत निश्चर गणझारी॥ अनिल अनल हिमि घाम परत कंटक मग माहीं। गड़ि गड़ि जावैं पांव बिपति सहिजात सुनाहीं॥ पन्थ अगम दुखरूप मिलत सरिसर गिरिनारे। कन्दर खोह अपार जायँ नहिं नयन निहारे॥ अशन कन्द फलमूल शैन महि बल्कल चीरा। कानन कठिन कराल सुनत डरपहिं मन

धीरा ॥ सवैया ॥ मृगलोचनि कोमलगात अबै तुम कानन के नहिं योगअहौ । सुनि देहहिं लोग सुखोरि हमैं तुमहूं बनसंकट भूरि सहौ ॥ असजानि प्रिया घरमाहिं रहौ भल आपन जो हित मोर चहौ । नतु पावहुगी परिणाम दुखै वशप्रेम प्रिया हठ जोहि गहौ ॥

दो० प्रिया न करिबो हठभलो विदित अहै सबकाल ।
हठकरि दुखपाये अमित गालव नहुष भुवाल ॥

गालव मुनि कौशिक के पासा । बिद्यापढ़ि अस बचन प्रकासा ॥
मांगहुमुनि गुरुदक्षिणा जोई । आजु देउँ मैं तुमकहँ सोई ॥
यहि बिधि हठकीन्हे त्रयबारा । है मुनि क्रोधित बचन उचारा ॥
वसुशत श्यामकर्ण स्वहिं बाजी । देहु आनि तब होईराजी ॥
सुनि गालव दुख दुसह उठाये । खोजे मिले न दुइसै पाये ॥
इति हठ करि गालव दुख सह्यऊ । नहुष अवध नृप सुकृती रह्यऊ ॥
सुकृत प्रभाव इन्द्र पद लह्यऊ । इन्द्राणी सम भोगै चह्यऊ ॥
कहेउ शची नहि रथ महिदेऊ । आवो चढ़ि तब भोगै देऊ ॥
सुनिनृप सप्तऋषिन रथ लाई । है आरूढ़ चले हरषाई ॥
सर्प सर्प चलिये नृप भाखा । सुनि अगस्त्यबोले करि माखा ॥
होहु जाइ तुम सर्प भुवाला । इति हठ करि पायो दुख जाला ॥

दो० ताते हठ जनि कीजिये रहहु प्रिया निज ऐन ।
सासु श्वशुर सेवन करहु मानि मुदित मम बैन ॥

कवित्त ॥ सुनि सीय बैन पति कोमल अमल चारु लोचन सजल पुंज प्रेम अस्र छायकै । जोरि कंजपाणि युग बोली बैन सासु प्रति बारबार पद्मपाँय शीश आपु नायकै ॥ दीन पति प्राण मोहिं सीख जो सुहित भूरि दीन्ह सो बिचारि पुनि हीय मैं बनायकै पति सुवियोग सम कियो न त्रिलोक दुख भाग्यवन्त कहत पु-

राण वेद गायकै ॥ भ्रमरावलि छन्द ॥ कहि बैन इदं सिय राघव पाँय लगी। भ्रमरावलिसी बन जानन प्रेम पगी ॥ धरि धीर कह्यो करुणाकर मो कहँ जो। प्रभु चाहहु ज्यावन तौ जनि मौन तजो ॥ सवैया ॥ मातु पिता भगिनी सुत सुन्दर धर्म सुशील रचे सग भ्राते। मित्र पवित्र प्रिया परिवार जहाँ लगिहैं जग नेहरुनाते ॥ सेवक स्वामि सखा हित सज्जन भूरि बिरञ्चि दिये सुख दाते। नाह विहीन तियै सगरे प्रभु लागत हैं रविहूसन ताते ॥ देह सुगेह धरा धन राज सुसाज सबै सुख शोक समाजू। भोग सबै सम रोग अहै कल भूषणभार धरे जनु गाजू ॥ लोक सबै यम यातन सो सुख दानि लगै सगरे दुखदाजू। नाहविहीन तियै सपने सुख है नहिं सत्य कहौं इति राजू ॥ प्राण बिना तनु सोह न ज्यों अरु सोह न ज्यों सरिता बिनु बारी। चन्द बिना रजनी न सजै न सजै सरपंकजहीन तमारी ॥ सोह न शूर बिना रण ज्यों रसहीन यथा रस लुब्ध दुखारी। त्यों भगवन्त सुसत्य कहौं नहिं सोहतहै बिनुपूरुष नारी ॥ रयहितें नाथ साथ म्वहिं लेहू। तुम बिनु म्वहिंसुहाइनहिं गेहू ॥ प्रभुसंगम्वहिं बनखग मृग जाला। परिजन सम करिहैं प्रतिपाला ॥ बलकल बसन अशन फल मूला। पर्णशाल म्वहिं सुखद समूला ॥ नाथ साथ डर मोहिं न काऊ। रहब सुखी जहँ जहँ प्रभु जाऊ ॥ क्षुधा तृषा बश दुखित न ह्वैहौं। प्रभु पद कमल निरखि सुखपैहौं ॥ मोहिं सकल सुख रैरेहि साथा। असजियजानितजहुजनिनाथा ॥ रोलाछन्द ॥ रहै भानु बिनु दिवस रहै चाँदनि बिनु चन्दा। रहै बारि बिनु पात्र रहै झख बिनु जल बृन्दा ॥ रहै कमल बिनु पाथ रहै सेवक स्वच्छन्दा। मैं न रहौं क्षणएक नाथ तुमबिनु सुखकन्दा ॥

दो० सुनि प्रमाण लखि प्रीति दृढ़ कह्यो बिहँसि रघुनाथ।

त्यागि प्रिया मन शोच सब चलहु बेगि बन साथ ॥
सीय सहित रघुबंश मणि मातु चरण शिरनाय।
बारबार कर जोरिकै चले सुआशिष पाय ॥

कुण्डलिया ॥ पाये लच्मण लाल जब राम गवन बन हाल। अति आतुर आये तहाँ बिलखत परम बिहाल ॥ बिलखत परम बिहाल धरे रघुपति पद माथा। कहि न सकत कछु बैन ठाढ़ जोरे युगहाथा ॥ बन्धु बिकल अवलोकि राम बहु बिधि समुझाये। प्रभु बियोग सुनि सहमि अधिक लच्मण दुख पाये ॥

पुनि प्रभु कह्यो वचन सुखदाई। धरहु धीर लखि अवसर भाई ॥
जो मैं तुमहिं चलौं लै संगा। तौ पुर होइ काज सब भंगा ॥
भरत शत्रुसूदन गृह नाहीं। दुखित मातु पितुमम दुखमाहीं ॥
सबप्रकार असमंजस भ्राता। असजियजानि रहहुगृहभ्राता ॥
ज्यहि नृप राज प्रजा दुख पावै। अवशि भूप सो नरकहि जावै ॥
मातु पिता पद सेवन कीजै। लाभ लोक परलोकहु लीजै ॥
सुनि लच्मण बोले मृदु बैना। सुनहु कृपा करि राजिव नैना ॥
नाथ दिह्यो सिखवन जो मोही। सो सब करन चाहिये वोही ॥

दो० जाहि सुगति कीरति बिभव प्रिया पुत्र पितु मात।
मोरे तौ सबभाँति यक तुमहींसों प्रभु नात ॥

कबित्त ॥ मनवचकर्म छाँड़ि कपट सुसत्य भाय रावेरेहि पाँयदृढ़ एक अनुरागिये। आपुहीसों काम बसुयाम अभिराम राम धाम धन भीव हैन प्रेम आपु पागिये ॥ आपुही भरोस आस दूसरो न जान दास जीवको सुपास प्रास आपुहीके लागिये। भाग्यवन्त जानि सबभाँति मोहिंआपनो सुराखिये शरणस्वामि दासही नत्यागिये ॥

दो० बन्धु बचन सुनि सरलशुचि कहेउ राम सचुपाय।

तात बिदा ह्वै मातु सन बेगि चलहु बन आय ॥

छंदचौपैया ॥ सुनि रघुबरबानी अतिसुखदानी लषण मोद मन छायो। अतिहरष समेता मातु निकेता आय चरण शिर नायो ॥ लखि मलिन सुगाता पूछेउ माता कारण लषण बखानी। सुनि सहमि सुबानी धीरज आनी पुनि बोली मृदुबानी ॥ सुनिये सिख ताता तव पितु माता सीय राम सुख दैना। रघुपति जहँ जाहीं अवध सुताहीं तहैं तुमहिं सुख चैना ॥ सिय राम जु जाहीं बन घर माहीं काज कवन तव ताता। त्यहिते सँग जाहू जीवनलाहू लेहु सफल करि गाता ॥ सुत मोहिं समेता भाग निकेता भयो लाल बलिजाऊँ। जो छल तजि सारे चित्त तुम्हारे किह्यो रामपद ठाऊँ॥

सवैया ॥ पुत्रवती युवती जगस्वै रघुनायकभक्त तनै ज्यहि होई। नातरु बाँझ भली जगमें सुत जन्मत नाहक भै तिय सोई ॥ राम सुबाम भये सुतते बड़ि हानि कहै कबि कोविदलोई। भाग्यबली भगवन्त स्वई सियरामके रङ्ग रँगो नर जोई ॥

अस जिय जानि रामसँग जाहू। लेहु तात जग जीवनलाहू ॥
राम सीय पद सेवन कीन्ह्यो। स्वपनेहुचितकहुँअनतनदीन्ह्यो॥
समुझि हृदय स्वइ करेहु उपाई। ज्यहि दुख लहैं न सियरघुराई ॥
असकहि सुतहि लाइ उर लीन्ही। जाहु मुदितमन आशिषदीन्ही॥
मातुचरण सादर शिरनाई। चलेलषण शुभ आशिष पाई ॥
आय रामपद बंदन कीन्हे। मुदित लिवाय संग प्रभु लीन्हे ॥

दो० सीता लषण समेत प्रभु कृपासिंधु गुणधाम।
चले मुदित आये तुरत नृपमंदिर अभिराम ॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवंतसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रंथेश्रीदशरथ महाराजविषादजानकीरघुनन्दनकौशल्याप्रतिबिदामांगनसुमित्रालषणसंवाद सीतालक्ष्मणसहितप्रभुनृपगासआगमनवर्णनोनामचतुर्थोऽध्यायः ४ ॥

सीता लषण सहित रघुनाथा। जाय भूपपद नायउ माथा ॥
सहित सीय सुत सुभग निहारी। भय अतिबिकल धीरधुरधारी ॥
अति सनेह गहि हृदय लगावा। प्रेम विवश मुख वचन न आवा॥
तब रघुनाथ जोरि युग हाथा। कहेउ बिदा म्वहिं दीजै नाथा॥
सुनि प्रभुवचन भूप दुख पाये। गहि कर निकट राम बैठाये॥
बहुप्रकार सिखदीन महीपा। रहत न जाने रघुकुलदीपा॥
तब सीतहि उर लीन लगाई। दीन विविध बिधि सीखसुहाई॥
नहिं सुहानि सुनि सीतहि कैसे। चकइहि शरद चाँदिनी जैसे॥
दो० केकयसुता सकोप तब मुनिपट साजन आनि।
बोली धरि रघुबर पहिरि जाहुबनै हित जानि॥
राम तुरत मुनि बेष बनि अनुज जानकी साथ।
चले बंदि गुरुबिप्र पद नाय मातु पितु माथ॥
आये गुरु वशिष्ठके द्वारे। देखिलोग सब भये दुखारे॥
राम सबहिं बहु धीरज दीन्हे। याँचकबृन्द बोलि पुनिलीन्हे॥
दान मानकरि बिनय बड़ाई। प्रमुदित कीन्ह सबहिं रघुराई॥
गुरुसन कहेउ जोरियुग पानी। तुम रक्षक सबके मुनिज्ञानी॥
असकहि राम गुरुहिं शिरनाये। सुमिरि गजानन मुदितसिधाये॥
प्रभु बनचलत बिकल सब लोगू। कहिनजाय पुर दारुण सोगू॥
दो० इहाँ सुमंत्रहिं बोलिकै कहेउ बिकल नरनाथ।
रामहिं यान चढ़ायलै जाहुसखा तुम साथ॥
बन देखाय अन्हवाय सरि तातगये दिनचारि।
सिय समेत द्वउ बन्धु पुनि लायहुपुर लौटारि॥
लौटहिं नगर न जो द्वउ भ्राता। तौं तुमकहब बिनयकरिताता॥
देहु फेरि रघुपति बैदेही। कहिनि सँदेशमातु पितुयेही॥

ज्यहिअवलम्ब अवधिलगिप्राना। रहहिनतरुमम अवसि निदाना॥ कहिअस परेउ बिकल नरनाथा। चले सुमन्त नाइपद माथा॥ रथ अतिरुचिर साजि तहँ लाये। विविधभाँतिकरि बिनयसुनाये॥ सुनि पितु शासन राम उदारा। प्रिया अनुज युत भये सवारा॥ चलेनाय प्रभु अवधहि माथा। पुरजन विकल लगे सबसाथा॥

गीतिका छन्द॥ पुर लोगलागे साथ व्याकुल राम बहुबिधि फेरहीं। नहिं फिरहिं ते वशप्रेम प्रभु मुखओर चकंटक हेरहीं॥ लागत भयानक नगर अति जनु कालनिशि अँधियारि है। नर नारि जन्तुकराल डरपत एक एक निहारि हैं॥ निजधाम ज्योंहि मशान परिजन भूतसम भयदानिहैं। यमदूतसम सुतमीत हित जनुचहत मारन आनिहैं॥ बनबाग बेलिमलीन सरिसर हेरि नैन न जावहीं। गजबाजि पशु मृगविहंग व्याकुल देह सुधि बिसरावहीं॥ त्यहि समय दारुण दुसहदुख क्यहिभाँति कउ बरणनकरै। रघुबीर बिपिन पयानसुनि अस कौन जो धीरज धरै॥

दो॰ यहिबिधि पुरजन सहित सब कृपासिंधु रघुनाथ।
जायरहे तमसा निकट प्रथम दिवस बिनुपाथ॥
अवध दक्षिणैं कोस छा तमसा नदी बिशाल।
चैत्रशुक्ल तिथिनौमिको आये रामकृपाल॥

सवैया॥ श्रीरघुबीर कृपा परिपूरण संतत दासनके दुखहारी। आपुदुखी बहुभाँति भये अवलोकि प्रजा निज प्रेम दुखारी॥ भाँति अनेक दिये उपदेश फिरैं नहिंलोग सनेह सँभारी। शीलसनेह न जांइ तजो रघुनाथहिं भो असमंजस भारी॥ छप्पै॥ लोगगये सब सोइ शोक श्रमवश निशिपाई। बिगत निशा युगयाम कह्यो सचिवहिं रघुराई॥ चक्रचिह्न दरशाय भ्रमित हाँकहुरथ ताता। ना-

हिन अपर उपाय चहत बिगरन सबबाता ॥ इमि सचिव रामशासन अकनि प्रभु सिय लषणचढ़ाय रथ । दिशि बिपिन तुरत हांकत भयो रथकर खोज दुरायपथ ॥ तोटक छन्द ॥ भय भोर जगे पुर लोग जबै । गय राम उठे करि शोर सबै ॥ रथ खोज कतौं नहिं पावतहैं । कहि राम चहूँ दिशि धावतहैं ॥ भय ब्याकुल भूरि न धीर धरैं ॥ यक एकन यों उपदेश करैं ॥ बनमें संग जानि कलेश महाँ । तजि दीन हमैं रघुनाथ यहाँ ॥ छग जीवन राम बिना जग मैं । बपु छाँड़ि न हंस गये सँगमैं ॥ यहि भांति बिलाप कलाप करैं । झख बंश प्रशंसि निजै निदरैं ॥ त्यहिऔसर केर बिषादमहा । नहिं जात कह्यो सुनि धीर बहा ॥

दो० यहि प्रकार बिलपत सकल आये अवध सप्रेम ।
राम दरश हित नारि नर लगे करन व्रत नेम ॥

कुण्डलिका ॥ सीता सचिव समेत इत राम लषण द्वउ बीर । शृंगवेरपुर जायकै पहुँचे सुरसरि तीर ॥ पहुँचे सुरसरि तीर उतरि कीन्हे अस्नाना । पीवत अमल सुवारि भये मन मुदित सुजाना ॥ जाना मरम निषाद साजि शुभ भेंट पुनीता । चल्यो मिलन सानंद गयो जहँ राघव सीता ॥

दो० करि प्रणाम आगे धर्‌यो भेंट मूल फल कन्द ।
अति सप्रेम यकटक चितै रह्यो राम मुख चन्द ॥
तब रघुनाथ सनेह बश सादर ढिगबैठाय ।
कुशलप्रश्न पूछी मुदित प्रेम न हृदय समाय ॥

रोलाछन्द ॥ सुनि निषाद करजोरि नाय शिर बचन उचारे । कुशलनाथसब भाँतिदेखि पदपद्म तुम्हारे॥ मैं सेवक प्रभुआपु कृपा कीन्ह्यो जनजानी। दीन्ह्यो दरश कृपाल कहौंकिमि भागबखानी ॥

अब चलि नगर कृपाल करिय पावन ममधामा। सुनि सप्रेम त्यहि
बैन कह्यो सादर श्रीरामा॥ कह्यो सखा तुम नीक मोहिं पितु आ-
यसु आना। चौदह वर्ष निवास विपिनभल नगर न जाना॥

दो० सुनि प्रभुबचन निषाद मन भयो विषाद अपार।
कहहिं नारि नर देखि द्वउ बंधु परम सुकुमार॥

सवैया॥ सुन्दर श्यामल गौर किशोर अनूपम आनन चंद्र उ-
दैसे। अङ्गन अङ्ग अपार प्रभा युग वेष धर्‌यो रतिनायक जैसे॥
कोमल शील सुभाव भलो भगवन्त बखान करौं छवि कैसे। ते पितु
मातु कहौ सजनी किमि जे पठये वन बालक ऐसे॥ सुनि बानि
सुतासु सयानि सखी कउ एक कहै भल भूप किये। छविसागर
नागर बालक ये बहु कामप्रभा जिन जीति लिये॥ सहि संकट
आपु इन्है पठये बन देखि जिन्है मगलोग जिये। भगवन्त मही-
पति धन्य मही जिन लोचनलाभ हमें सुदिये॥

तबहिं निषाद हृदय अनुमानी। द्रुम शिंशुपा सुहावन जानी॥
शीतल सुखद छाहँ सबकाला। गयो तहाँ लै राम कृपाला॥
निजकर कुशसाथरी बनाई। मृदुमंजुलमय दीन डसाई॥
कंद मूल फल विविध सुहाये। दिये आनि लखि प्रभुमन भाये॥
सीता सचिव सहित द्वउ भाई। भोजन कीन प्रीति अधिकाई॥
करि भोजन सोवन प्रभु लागे। गहि शर चाप लषण अनुरागे।
बैठे कछुक दूरिपर जाई। कसि निषंग शरचाप चढ़ाई॥

दो० गुहबुलाय बहुपाहरू जहँ तहँ राखे आय।
बैठ्यो धनुशर साजिकै आपु लषण पहँ जाय॥
भूमि कुशासनपै निरखि सोवत राजिव नयन।
पुलकगात लोचन सजल कहत लषण सन बैन॥

सवैया ॥ जे रघुनंदन सीय सदा सुख सिंधु जिन्हें शिव मानस गोए। ध्यावतहैं भगवन्त जिन्हें मुनि सिद्ध सदा तन लाजनखोए ॥ शैनकरें नित भूपनिलै मन लाजत मैन सुजो सुख जोए। ते सिय राम कृपा परिपूरण कानन भूमि कुशासन सोए ॥

दो० फणि मणिसम भूपति जिनहिं जोगवत आठौयाम।
सोवत महिस्वइ रामसिय बिधिगति काहिन बाम ॥
कह्यो लषण यामें कछू दोष न काहुक होय।
करै कर्म जैसे ज्वई तस फल पावै सोय ॥
मोह मूल दुख रूप सब जानिय जग ब्यवहार।
सत संगति रघुपति भगति सार अंश संसार ॥
ब्यापक ब्रह्म अनादि अज अविगत अलख अभेद।
नेति नेति कहि जाहि नित बरणत बाणी वेद ॥
राम स्वई निज भक्तहित धरि जग मनुज शरीर।
करत चरित पावन विविध सुनत मिटहिं भवभीर ॥
सखा समुझि मन माहिं अस परिहरि मोह विकार।
भजहुराय रघुनायकहि हरण घोर भवभार ॥

यहिविधि कहत राम गुणगाहा। भयो भोर जागे सुरनाहा ॥
करि मज्जन बटक्षीर मँगाये। बन्धु सहित शिर जटा बनाये ॥
लखि सुमंत मन भयो दुखारी। कहत बचन भरि लोचन वारी ॥
नाथ कहेउ म्वहिं कोशलराई। विपिन दिखाय गंग अन्हवाई ॥
सीता अनुज सहित रघुनाथै। लायहु फेरि बेगि निज साथै ॥
सुनि रघुबीर सचिव बरबानी। बोले गिरा धर्म नयसानी ॥
तात तुम्हार मर्म सब जाना। सत्य समान धर्म नहिं आना ॥

दो० शिवि दधीचि हरिचंद नृप रंतिदेव बलिभूप।

धर्म धस्यो सहि संकटहि कीरति विदित अनूप ॥

किरीटछंद ॥ एक समय शिवि यज्ञकरैं महिदेव रहैं तहँ बैठ अ-पास्न । इन्द्रस अग्नि सुन्यो यशाकान चल्यो तहँ लेन परीक्षहि का-स्न ॥ अग्नि कपोत स्वरूप भयो अरु वासव बाज कियो बपुधारन । खेद्यउ बाज कपोत भज्यो डरिजाय दुस्यो नृप गोद मँझारन ॥

सवैया ॥ पाछयहि धावत बाजगयो तहँ देखि नृपै असबैन सुनायो। भूप अहौ धरमज्ञ बड़े यशपुंज तुम्हार महूँ सुनि पायो ॥ आवहि याचक द्वार जुकै तुमसों वह नेमुख जान न पायो । सो अवधर्म्म सँभार करौ यशते यश लोकन भूप करायो ॥

दो० भोजन मोर कपोत यह त्यहि क्यों गोद दुराय ।
बहुत दिवस को क्षुधितहौं दीजे म्वहिं पकराय ॥
सुनि राजा बोलत भयो श्येन बात सुनिलेउ ।
पक्षी आयो शरण मम त्यहि कैसे तजिदेउ ॥
शरणागत आवै जु निज ताहि तजै जो कोय ।
कोटि ब्रह्महत्या सरिस त्यहि शिरपातक होय ॥

ताते यह मोते जनि मांगौ । तजि यहि आश पंथ निजलागौ॥
सुनत बाज कह बचन बनाई । धर्म धुरीण अहौ तुमराई ॥
जो मम अशन देउ नहिं याही । तौ निश्चय मम जीवन नाही ॥
म्वहिं बिनु मरी सकल परिवारा । कवन धर्म तब तुम्हें भुवारा ॥
एक पुण्य अरु पातक भूरी । इन धर्मन कछु परी न पूरी ॥
कह नृप वृथाबाद जनि करहू । तजवन याहि सकल जो मरहू ॥
अपर माँगि जो चाहै लेहू । बिनु सन्देह बेगि सो देहू ॥
यहि बिधि हठ कीन्हेउ जबराजा । तब करिक्रोध कहेउ स्वइ बाजा ॥
धर्मवान जो नृप कहवावो । तौ यहिसम निज मांस खवावो ॥

सवैया ॥ सुनि भूप मँगाय तुला तुरतै यक ओर सो आमिष काटि धस्यो। बैठाय कपोत दुजे पलरा गहि पाणि उठाय न पूरसस्यो ॥ बहु बार धस्यो न पुस्यो जबहीं तबहीं नृप आपुहिं कूदि पस्यो। लखि लज्जित अग्नि बिड़ौज भये नभ हर्षित जयजय देव कस्यो॥

दो० ह्वै प्रसन्न भगवन्त तब नृप कहँ दरश दिखाय।
धन्यधन्य कहि धन्य नृप गय हरि अनललजाय॥
धर्म हेतु शिवि भूप इति संकट सहे अपार।
सो भगवन्त बिचित्र यश बिदित सकल संसार॥

भूप दधीचि धर्म के हेता। दुख जो सहे कहै को तेता॥
तनुतजि अस्थि सुरनकहँ दयऊ। तिनकोसुयशलोकतिहुंछयऊ॥
नृप हरिचंद सुयश जग जाना। मुनिकौशिकतिनसोंछलठाना॥
सरबसु दीन बेंचि निज अंगा। कहउँकहांलगि बिपतिप्रसंगा॥
धर्म न तज्यो सहेउ दुखजाला। बिदितसुयशतिहुंलोकबिशाला॥
रन्तिदेव यश त्रिभुवन छावा। बहु उपास करि भोजन पावा॥
सो यक अभ्यागत को दयऊ। आपुउपास्यहि पुनिरहिगयऊ॥

दो० धर्म हेतु बलि बावनहिं दीन्हीं पीठि नपाय।
बिदितसुयश तिहुँलोक सो कहउँकहांलगिगाय॥
धर्मवान ऐसे अमित सहि बहु संकट लीन।
तन धन सर्वसु दैदिये धर्म न त्यागन कीन॥

त्यहि ते सत्य तजब हम नाहीं। नाशै धर्म अयश जग माहीं॥
अस बिचारि पुर गवनहु ताता। पितुसनजायकहब असिबाता॥
नाथ कृपा बल पुण्य तुम्हारे। सब प्रकार बन कुशल हमारे॥
ममहित शोच करिय जनिनाथा। पितुसन कहब जोरियुग हाथा॥
तुमहुँ उपाय करब सोइ ताता। ज्यहिनशोचदुखलहुपितुमाता॥

सुनि सचिवहिं दुखदारुणभयऊ। नृप संदेश कहनपुनि लयऊ॥
॥सवैया॥ नाथ कह्यो अस कोशलनाथ अबै लघु वै मिथिलेश
कुमारी। फेरिय ताहि उपायनकै न सकी सहि सो वन संकटभारी॥
आवहि ज्यों सिय लौटि घरै भगवन्त करौ सोइ युक्ति विचारी। पाय
बिना अवलम्ब कछू नहिं जीवन मो झख ज्यों विनुबारी॥
दो० पितु सँदेश सुनि जानकिहि बहुविधि सिखवनदीन।
सासु श्वशुर सुख कहि बहुरि बन दुख बरणन कीन॥
सो० सुनि सादर पति बैन बोली सिय कर जोरिकै।
सुनिये राजिवनैन कृपासिंधु शोभा सदन॥
॥सवैया॥ जान शिरोमणि ज्ञानमई कुल हंस प्रभाकर हे सुख-
दाई। आपु बिचारि कहौ जिय सों कहुँ छांह सकै रहि देह बिहाई॥
जाय प्रभा तजि भानु कहां कहँ चंद्रिक चंद्र कहौ तजि जाई। यों
भगवन्त सप्रेम बिनै रघुनाथहिं सादर सीय सुनाई॥
बहुरि सचिवसन कह कर जोरी। क्षमिये तात ढीठता मोरी॥
आरजसुत पद कमल बिहीना। बादिनातजहँलगिविधिकीन्हा॥
प्राणनाथ बिनु जग सुख भोगू। कहउँ सत्य सब जारइ योगू॥
त्यहिं ते सासु श्वशुर सन मोरी। बिनय करब सादर कर जोरी॥
मोर शोच कीजे कछु नाहीं। मैं प्रभु संग सुखी बन माहीं॥
भयसुनिबिकलसचिवसियबानी। कहउँ काह सो दशा बखानी॥
समुझाये बहु बिधि रघुबीरा। तदपि न होत सचिव मन धीरा॥
शिर धरि सादर राम रजाई। फिरेउ सुमंत सबहि शिरनाई॥
दो० राम सुमंतहि फेरिकै बहुप्रकार दै धीर।
आपु लषण सीता सहित आये सुरसरि तीर॥

इतिश्रीमदयोध्यासिंहवर्मात्मजभगवंतसिंहविरचितेभक्तिशिरोमणिग्रन्थेश्रीराम
चन्द्रवनयात्राशृंगबेरपुरआगमनसचिवसंवादवर्णनोनामपंचमोऽध्यायः ५॥

सवैया ॥ दीनदयाल सभीतन पाल कृपाल सदा सुख दासन दायक । वेद पुराण पुकारतहै गुण दिव्य कलाप भरे सब लायक ॥ धर्म धुरीण उदार सुखालय बीर प्रसिद्ध धरे धनु शायक । बन्दत हैं भगवन्त सदा कर संपुटकै पद श्रीरघुनायक ॥ कुण्डलिया ॥ राम कह्यो तब केवटहि लै आवहु निज नाव । सुनि बोल्यो केवट वचन सुनिये श्रीरघुराव ॥ सुनिये श्रीरघुराव मरम रौरे मैं जाना । कीन्ह्यो शुभ मुनि नारि रही जो कठिन पषाना ॥ ताते कठिन न काठ डरौं गति सुनि मुनिबामा । मानुष करणि सुमूरि अहै पद-रज श्रीरामा ॥ कवित्त ॥ पाहन ते काठ की कठोर है न मेरी नाव नाथ सो उड़ातबार नेकहू न लाइहौं । पालौं परिवार सब याही अ-वलम्बलाय दूसरो कबार है न बालक्यों जियाइहौं ॥ होय कुल आ-पने कि हानि जो चढ़ाउँ नाव द्रव्यहू बिहीन क्यों सुदूसरी सजाइ हौं । रावरे शपथ बात साँची कहौं भाग्यवन्त धोये बिनु धूरि पांव नाव ना छुवाइहौं ॥ भूरि है प्रभाव पगधूरि को प्रसिद्ध लोक रावरे न लाग अनुराग रूपधारिहौं । मानुष उड़ात है परसि जाहि गात मैं सुछोटी गति काठकी सँभार कौन कारिहौं ॥ गौतमकि नारि गति होय जो तरणि आजु मेरे परिवार सब बाट मोरि पारिहौं । भाग्यवन्त कीजिये उपाय किन कोटि आपु धोये बिनु पावँ नाथ पार ना उतारिहौं ॥ सवैया ॥ कोटि करौ किन वान छरौ नहिं जी-वत आपनि हानि करैहौं । मोहिं मरे परिवार बचै बनबाहन हीन सबै मरिजैहौं ॥ लेत ध्ववाय नहीं पद क्यों मम नाव उड़ाइ कहां तुम पैहौं । सत्य कहौं पग धोये बिना भगवन्त तुम्हैं नहिं नाव चढ़ैहौं ॥ प्रभु चाहहु पारहि जान जुतौ सुपखारन पायँ कहौ कस ना । पद धोइ उतारिहौं पार चहौं उतराइ कछू तुम सों मैं ना ॥ बरु

मारहिं लक्ष्मण तीर चढ़ै जबलौं पदपद्म पखारवँ ना। तबलौं भगवन्त सुसत्य कहौं प्रभु रौरवहि पार उतारवँना॥ कबित्त॥ केवट के बैन सुनि प्रेम लपटाने चारु बिहँसे कृपाल मन मोद भो अपारही। देखिकै सनेह तासु शीलसिंधु वारवार जानकी लषण ओर राघव निहारही॥ कह्यो करु वात सो न जाय ज्यहि नाव तव आनि कै सुजल पाँय वेगि तू पखारही। होतहै अबार अब लावै न बिलंब भूरि धोयकै चरण मोहिं पारको उतारही॥ व्यापक अखिल विश्व पूरण बिरज-ब्रह्म ध्यानन अगम्य जापि योगीजन जागते। लावत समाधि शम्भु गावत सुयश वेद पावत न पार मुनि पाप पुंज भागते॥ शीलसिंधु नागर उदार चित्त कारुणीक दीनवन्धु दानिदास प्रेमपागं पागते। भाग्यवन्त स्वामि सोई पावन सुप्रेम वश ठाढ़े सरितीर नाव केवटसों मांगते॥ सवैया॥ ज्यहिथाह लहै श्रुति शास्त्र नहीं मुनि ध्यावनिकायन ध्यान अड़े। जपि नामतरे बहु पापभरे नर गोपद सो भवसिंधु बड़े॥ यमनादि अजामिल आदि कवी भय शुद्धकटे दुखजाल कड़े। भगवन्त स्वुईप्रभु केवटसों अनुरागसों मांगत नाव खड़े॥ हरिपदछंद॥ केवट राम रजाय पायकै परिजन सकल बुलायो। अति आनन्द कठौता भरिकै सुरसरि जल लै आयो॥ चरण कमल प्रभु धोवन लाग्यो कहि न जाय सुखभारी। बरषहिं सुमन देव नभ संकुल जय जय शब्द पुकारी॥ जेपद कमल चहत विधिशंकर मुनिजन ध्यान न पाये। ते पद पद्म आजु यह धोवत कुटुँब सहित उरलाये॥ धन्य धन्य कहि देवताहि बहु मुदित दुन्दुभी दीन्हे। केवट पाँय पखारि बारि स्वइ पान कुटुँब सह कीन्हे॥

दो० कीन पान जल कुटुँब सह केवट परम प्रवीन।

आप तर्यो परिजन सहित पितरपार सब कीन ॥
तब केवट अति आनँद पायो। सादर आनि सुनाव चढ़ायो ॥ गयो पारलै सबहिं तुरंता। कहि न जाय उर हरष अनंता ॥ तब केवटहि बोलि रघुराई। कह्यो लेहु थोरी उतराई ॥ सिय मुद्रिका देन प्रभुलागे। केवट कहेउ बचन अनुरागे ॥

नाराच छन्द ॥ लह्यों न आजु काह मैं कृपा कटाक्ष नाथके। मिटे दरिद्र दोष दुःख जन्म जन्म साथके ॥ किये कलाप काल जो कृपाल मैं मँजूरिका। दिये विरश्चि आजुसो बनाय भारि पूरिका ॥ सवैया ॥ जे पद ध्यावत शम्भु सदा श्रुति गावत कीरति दिव्य जगी है। जे पदपंकजसों प्रगटी सरिदेव विलोकत पाप भगी है ॥ जे पदपंकज पेषन को सुरसिद्धन की नित आस लगी है। धोयउँ मैं भगवन्त स्वई पदनाथ कृपा अब काह खँगी है ॥ जे पदपंकज धूरि छुये अधमै गति गौतम नारि लही है। जे पदधोय विदेहलहे सुख कीरति दिव्य प्रकाश मही है ॥ जे पदपंकज को बरणै श्रुति शारद पुंज प्रभाव सही है। ते पदकंज प्रक्षाल्यउँ मैं भगवन्त कमी अब काह रही है ॥

दो॰ फिरति बार जनजानि म्वहिं जो कृपाल कछुदेव।
सो प्रसाद भगवन्त मैं सादर शिर धरिलेव ॥

नाराच छन्द ॥ किये उपाययो कदम्बपै कछू न सो लिये। स्व भक्ति चारुदै बिदा सुराम केवटै किये ॥ पुनः नहाय गंगराम पूजि शम्भु भायके। किये बिनै बहोरि सीय गंग माथनायकै ॥ प्रभाव ब्रह्मवारि बारबार ही बखान की। दई अशीश गंग तौ प्रसन्नपाय जानकी ॥ कह्यो कृपालु तौ सखाहि भौन आपु जाइयो। तबै नि-षाद नाथ जोरिहाथ यों सुनाइयो ॥ जहाँ लगापु जाइहौ तहाँलु हौं

पठायकै। फिरौं बनाय पर्णशाल शासनापु पायकै॥ बिलोकि ता सनेह राम लीन बोलि साथही। चले गणेश शंभु ध्याय नाय गंग माथही॥ सखा सबंधु राम सीय पाय बीच बासही। लख्यो प्रभात जायकै कृपाल तीर्थराजही॥ कहौं प्रभावपुंज क्यों बखानि तीर्थराजको। लह्यो प्रमोद पेखि राम जासु राजसाजको॥ तहाँ त्रिबेनि न्हाय राम पूजि चन्द्रभालही। दिये बुलाय विप्रवृन्द दानमान जालही॥ चले सवेग राम आय भारद्वाज आश्रमै। सुने मुनीश हीय भो प्रमोदजाल तासमै॥ किये प्रणाम रामहीं मुनीश धाय लाइयों। दिये अशीश भूरिही प्रमोद ना समाइयो॥ सुबूझि कुशलात शुभ्र आनि आसनै दिये। सप्रेम पूजि भांति भूरि पूर्ण भावसों किये॥ दिये सुधा समान स्वाद कंद मूल लायकै। सखा सबन्धु राम सीय भे प्रसन्न खायकै॥

दो॰ परम प्रसन्न बिलोकि पुनि कृपासिंधु सुख ऐन।
भरद्वाज मुनिराज तब बोले अति मृदु बैन॥

सवैया॥ आजु भयो सिधि काज सबै तप तीरथ त्याग समाधि लियेको। योग बिराग सुसिद्धि सबैफल आजु लह्यो जप दान दियेको॥ त्यों भगवन्त भयो सफलाजु सबैसुख साधनसाज कियेको। राम तुम्हैं अवलोकत आजु भयो परिपूरण लाहु जियेको॥

दो॰ अब कृपाल करिकै कृपा म्वहिं बर दीजै येहु।
ज्यहि पदपंकज रावरे उपजै सहज सनेहु॥

छंदत्रोटक॥ जबलौं जन आपु न होय सही। तबलौं सुख स्वप्न न जीव लही॥ सुनि राम लह्यो सुख पुंज हिये। मुनिकी पुनि अस्तुति भूरि किये॥ तुम आदर जासु मुनीश करो। बड़ सोइ सबै गुणग्रामभरो॥ त्यहि अवसर प्रागनिवासि जिते। तहँ आवत भे

सुधि पाय तिते ॥ अति आनँद प्रेम उमंग युतै। अवलोकन कोशलराज सुतै ॥ सबसों रघुबीर प्रणाम किये। लहि लोचनलाहु मुदित्त हिये ॥ बहुभाँतिन आशिरबाद दिये। धरि राघव रूप अनूप हिये ॥ भवने गृह आनँदजाल लही। सुखमा रघुबीर सराहतही॥

तब निशि जानि तहाँ रघुबीरा। किय बिश्राम हरण भवभीरा ॥
प्रातकाल उठि प्रात नहाई। सखाअनुजसह सिय रघुराई ॥
आयसुलहि करि मुनिहिंप्रणामा। चले बनहिं सानँद श्रीरामा ॥
ज्यहि मग निसरहिं ग्राम किनारे। होहिं मुदित सब देखनहारे ॥
सिय रघुबीर निरखि छबि ऐना। कहहिं एक एकनसों बैना ॥
एक कहहिं सियबदन सोहावत। चन्द्रसमान अली म्वहिं भावत ॥
षोड़श कलनयुक्त निशिराई। सीय बदन सुखमा बहु छाई ॥
शशिमहँ श्याम रेख यक राजै। सियमुखपर लट श्याम बिराजै ॥
शशिहि मृगाङ्क कहत कबिभूपा। यह मृगनैन सुखद मुदरूपा ॥
तापहरत वह यह त्रयतापा ।सियमुखशशिसमसाखियकथापा॥
एक सखी सुनि कह मृदुबानी। सियमुख कमलसरिस मैंजानी ॥
अरुण मृदुल अरु गंध बिशेखी। सिय मुख माहिंसकल सोदेखी ॥
कमलसुयशकबिजन मुख गायो। सियमुखसुयशलोकतिहुँछायो ॥
सीत सुवन पंकज जग जानै। यह प्रसिद्ध सीता श्रुतिभानै ॥
उपमा और न सम सरि आवै। सियमुखकमलसरिसम्वहिंभावै ॥
सुनि पुनि सखी एक कह बाता। सियमुखसम न चंद जलजाता ॥
कमल मंदनिशि दिन निशिराई। दुहुन राहु हिमि शत्रु सदाई ॥
सिय मुख दुवन कतहुँ कउ नाहीं। करि बिचारि देखहु मन माहीं ॥
त्यहिते चन्द्र कमल सम नाही। सियमुख सरिस सियैमुखआही ॥
यहि मिस सियमुखसुछबिबखानी। भईं प्रेम बश सकल सयानी ॥

प्रभु सिय लषण देखि छबि खानी। बड़भागी सब आपुहि जानी॥
पुरजन रहे देखि ठगि ठाऊँ। सकहिं न बूझि नावँ अरुगाऊँ॥
जे कउ वृद्ध रहे बुधिवाना। रहा मरम कछु प्रथमहिं जाना॥
मन अनुमानि गये ते जानी। यइ सिय राम लषण छबिखानी॥
आदिहिते सब कथा सुनाये। पितु आयसु ये बनहिसिधाये॥
सुनि दुख भयो हृदय सब केहीं। राजहि रानिहि दूषण देहीं॥

॥ सवैया ॥ त्यहि औसर आवत एक भयो तहँ तापस बेष बिरक्त किये। लखि रामहि दण्डप्रणामकियो सुउठाय हृदै प्रभु लायलिये॥ पुनि लक्ष्मण पायँन लागि पत्यो सिय पायँन पूरण प्रेम हिये। मिलि फेरि निषादहि सादर सो अवलोकि रह्यो प्रभु चित्त दिये॥

दो० तापस केर प्रसंग यह पत्यो अचानक आय।
ताहि बरणि पुनि कहतहौं सोई कथा सुहाय॥

सवैया ॥ ग्राम बधू यक एकन सों कहतीं नृप बालक देखि सुहाये। भाग बड़ो भगवन्त तिन्हैं जिनके गृह ये सुत सुंदर जाये॥ कोमल गात किशोर महा अति अंग अनंग प्रभा बहु छाये। ते पितु मातु कहौ सखिहैं किमि जे बन बालक ऐस पठाये॥

दो० मग लोगन इमि देत सुख कृपासिंधु मति धीर।
सखा लषण सिय सहित प्रभु आये यमुना तीर॥

यमुना उतरि सखहि रघुबीरा। बिदा कीन गवनेउ धरि धीरा॥
प्रभु सिय लषण समेत वहोरी। यमुनहिंकिय प्रणाम कर जोरी॥
चले बिपिन सानँद रघुराई। कृपासिंधु भक्तन सुखदाई॥
मारग जात पथिक बहु मिलहीं। कहहिं देखि मृदु मूरति तिनहीं॥

सवैया॥ सुंदररूप अनूपबने सब राज सुलक्षण अङ्ग तुम्हारे। कानन पंथ कठोर महा करि केहरि बृन्द न जाहिं निहारे॥ संग

लिये सुकुमारि प्रिया पदत्राण न है मग कंटक भारे। होत यही अति शोचहिये लखि ज्योतिष झूँठ सुभाय हमारे॥

बहुरि बिचारि कहहिं कछुकाला। गये आपु पुनि होब भुवाला॥
यहि बिधि पंथ सबहिं सुख देता। जाहिं रामसिय लषणसमेता॥
ज्यहिपुर प्रविशि चलेप्रभुजाहीं। त्यहिपुर सरिस अमरपुरनाहीं॥
जे सिय राम लषण छबि देखे। ते जग पुण्य पुंज करिलेखे॥
ग्रामसमीप निकरि ज्यहि जाहीं। कहहिं देखि यक एकन पाहीं॥
आजु अबहिं यहि मारग जाता। सखि द्वै पथिकदीख सुखदाता॥

कवित्त॥ आगे सोहैं सांवरे बरन गौर पाछे नेकु लीन्हें सुकुमारि नारि प्यारि यक संग में। सहज सुहाये मुनि वेषहैं बनाये कटि तूनको लगाये धारि पानहीं न पग में॥ कंजदल लोचनबिशाल मुखचंद चारु सूखमा अपार सम ऊपमा न जग में। भाग्यवन्त कहौं छबिकैसे कै बखानि मुख देखे द्वैपथिक जात आली आजु मग में॥ किये मुनिवेष साथ लिये सुपुनीत बाम आजु द्वै पथिक याहि मारग सिधायगे। लघु लघु वैस छबि वैस ना त्रिलोक हेरि सुखमै सुछबि मग मगमै सुछायगे॥ भाग्यवन्त कहौं गति कैसे सो बखानि जिन आपने स्वरूप अग जग लौ लोभायगे। पाये मैंन आछी भांति देखन सुमुखचंद मोहनीसी डारिचित्त बित्तको चोरायगे॥

दो॰ सुनि इमि बानी नारिनर चले बिलोकन धाय।
कछुक दूरि आगे लखे जात सुपथ द्वउ भाय॥
बोली यक सखि एक सों देखु अली द्वउ भ्रात।
सुन्दर रूप अनूपवर नारि सहित मग जात॥

कवित्त॥ देखुरी पथिक द्वैक जात ये सुभाय बाट सूखमा नि-

धान रूप शीलके अगारेहैं। किये मुनिवेष पाणि लियेहैं धनुष बान कसेहैं निषंग काम कोटि जैतवारेहैं ॥ सोहै संग नारि एक अति सुकुमारि चारु शोभित शृंगार विनु हार भूमिभार हैं। भाग्यवन्त कार सुख दुखके हरनहार अतिशय उदार काहू नृपके कुमारेहैं ॥ सुन्दर सलोने घन सोनेके बरण चारु मंजुल मधुर मृदु मूरति उदार हैं।बीच दीसि दामिनीसि भामिनी प्रकाशमान सुकृत सनेह शील सुखमाके सारेहैं ॥ भाग्यवन्त रूप मैं सुवार कोटि कामरति आनँद अगार नैन चैन दैनहार हैं। रहै न सँभार तन देखत अपार छबि आली ये अनूप काहू भूपके कुमारेहैं॥ सवैया॥ नवपंकज लोचन चारु बने भृकुटी जनु काम कमान लसैं। करकंज शरासन बान गहे छबि अंग अनंगन भूरिवसैं॥ लिय संग सुभामिनि दामिनि सी अवलोकत जो रति मान नसैं। भगवन्त प्रभा किमि गायकहौं युग मूरति वै चित सों न खसैं॥ तनु श्यामल गौर किशोर अबै मुनि बेष किये शुभ शीश जटा। करकंज शिलीमुख चाप गहे सु निषंगकसे वर लंक तटा॥ मुख पूरण चन्द्रप्रकाश मनो ताकि हारत कोटिक मैन भटा। भगवन्त बखान करौं छबि क्यों लखि रूप भये नरनारि कटा॥ सजनी धनिहै वह ग्राम जहाँ सुखधाम सुबास किये नितये। धनिहैं त्यहि ग्राम गली भलिवै विहरे बसु याम सखी जितये॥ धनि वै नरनारि सुभूतल में सब भाँति सदैव जिन्हैं हितये। हमहूं अब धन्य भई सबहैं भगवन्त त्रिरूप इन्हैंचि-तये॥ कबित्त॥ आली एक बोलीबैन सुनी मैं ये बात कान कहौं सो बखानि ताहि सुनि चित्त आड़िले। येहैं राजपुत्र जात कानन सुतपकाज बनिता समेत पेखि वेष कृते ताड़िले॥ पालि पितु बैन चले क्षितिको हरनभार परै जो न सांच खनि औनि मोहिं गाड़िले।

भाग्यवन्त नामहैं लषण रामचन्द्र चारु कौशलेश चक्रवर्ति भूपके हैं लाड़िले ॥ चतुरंसा छन्द ॥ सुनि त्यहि बैना। भरिजल नैना ॥ बदयक आली। परम बिहाली ॥ कवित्त ॥ श्याम गौरगात अति कोमल किशोर वैसु माधुरी उमंग अंग अंग मैं सुछाये हैं। जनु रतिनाथ युत रति ऋतुनाथ साथ सुन्दर अनूप वेष मुनिको बनाये हैं ॥ प्राणनकेप्राण जगजीवन के जीवनय सुखमा समृद्धि कोटि कामभा लजाये हैं। भाग्यवन्त कैसे पितु मातुते कठिन जिन ऐसे सुखधाम पुत्र कानन पठाये हैं॥ रानिहू अयानि भूरि कीन जो न बूझि बात पाहनौते पुंजसो कठोरहीय तासुहै। राजहू न जान्य हू अकाज काज आपनो सुधारिबे बिचारजे कुबैन कान जासुहै॥ रूप शीलधाम कोटिकामभासु जैतवार ईनके बिछोह पाय लोग क्यों सुपासुहै। भाग्यवन्त आंखिनैं में राखिबे के योग हैं य दीन्ह कौन भाँतितेसु इन्हें बनबासुहै॥ सवैया॥ अति सुन्दररूप नखशिख लौं समहेरिन है उपमा जगकै। सुखसागर नागर आगरहैं छबिदायक मोद सुभायनस्वै॥ पितु मातु कठोर अहैं किमि ते पठये असि मूरति काननज्वै। भगवन्त हृदै सुहमेश बसौ अवधेशके बेश य बालकद्वै॥ मृदु पंकज पाँय नहीं पनहीं बन पन्थ महा दुखदायकज्वै। सुकुमार कुमार अपार अवै कबहूं न पर्यो जिनको श्रमकै॥ चलि हैं किमितेसु कठोरमही अवलोकिय शोचरह्यो सखिहै। भगवन्त हृदय नितमोंसु बसैं अवधेशके बेश य बालक द्वै॥ सुखधाम अनूपम मूरति ये इनको सखि का बनबास चहा। बनजान इन्हें बरसांगतमें वहि रानि कठोर हृदय न दहा॥ अवलोकिय काननजात सबै कहि हैं हमलोग विचारि कहा। वहि राज समाज विषे भगवन्त कहा नर चातुरकै न रहा॥

यहिप्रकार सब नर अरुनारी। समुझि समुझिमन होहिं दुखारी॥
कहहिं एक एकन समुझाई। लेहु निरखि छबि नयन अघाई॥
प्रेम विवश देखहिं सब शोभा। रूप अपार नयन मन लोभा॥
यकटक चितवत सँग सब लागे। चले जाहिं तनमन अनुरागे॥
कउ यक देखि छाँह सुखदाई। देहिं मृदुल तरुपात बिछाई॥
कहहिं सप्रेम जोरि युग हाथा। क्षणयक बिलँबि जाहु इतनाथा॥
मारगश्रम निवारि प्रभु लीजे। पुनि कृपाल जस भावे कीजे॥
तबलगिकउयकजल भरिलायो। अँचइयप्रभु मृदुबचन सुनायो॥

दो० जानि प्रीति सुनि बचन मृदु बटछाया भलि देखि।
सीतहि श्रमित बिलोकि अति रामकृपाल बिशेखि॥

क्षण यक बिलँबिगये त्यहि ठामा। सीता लषण सहित सुखधामा॥
भये मुदित सब नर अरुनारी। दुखितमीन जिमि लहि बहुवारी॥
चितवहिं सब सादर चितलाये। प्रेम बिबश तन सुधि बिसराये॥
छबि अपार नहिं बरणि सिराई। रतिशतकोटि मदन बलि जाई॥

सवैया॥ सुंदर श्यामल गौर कलेबर मोहनरूप मनोहर जोरी। पंकजनैन झुकी भृकुटी कलकाम कमानहुँकी गति तोरी॥ शीश जटा मुनिवेष किये धनु पाणिलिये कर त्यों बय थोरी। क्यों भगवन्त बखान करौं रतिनाथहुके मति भै लखि भोरी॥

राम लषण सिय छबि अवलोकी। यकटक रहे नयनपट रोकी॥
पुरतिय धरि धीरज मनमाहीं। सिय समीप सादर चलिजाहीं॥
करि प्रणाम पायँन शिर नाई। कहहिं सप्रेम बचन रुख पाई॥

सवैया॥ श्यामतमालसो गात मनोहर-कोटिक मैन लजावनहारे। पंकज लोचन बाहु बिशाल सुपाणि शरासन शायकधारे॥ त्यों भगवन्त बिलोकनि बंक चितै लिय चित्त सुचोरि हमारे।

पूँछति राजकुमारि तुम्हें कहियो सखि को वय आहिं तुम्हारे॥

दो० ग्रामबधुन के बचन सुनि मृदु मंजुल सुखऐन।
सकुचि सप्रेम सुभाय पुनि बोली सिय मृदु बैन॥

गौर शरीर सुभग सुकुमारे। ते लघु देवर अहैं हमारे॥
पुनि पिय ओर चितै सुखपाई। कह्यो स्वपति सिय सयनबुझाई॥
सुनि हरषीं अति सकल सयानी। पुनि सप्रेम बोलीं मृदुबानी॥
धाम कहाँ कोशलपुर हेरे। काके सुत दशरथ नृपकेरे॥
जात कहाँ इत बनहिं सिधाये। कारण क्यहि पितु शासनपाये॥
भईं बिकल सुनि सकल सयानी। धन्य धन्य पुनि आपुहिजानी॥
बार बार सिय पायँन लागी। कहहिं सप्रेम बचन अनुरागी॥

सवैया॥ राजकुमारि कबौ यहि मारग आउब जो फिरि आनँद खानी। तौ भगवन्त कृपाकरिकै पुनि दर्शन देव सुसेवकिमानी॥ हैं हम लायक कोइ नहीं दिशि आपनि हेरि सुप्रेम पिछानी। दीनदयाल दया न तज्यो सब भाँतिन मोहिं सुआपन जानी॥

दो० सुनि सप्रेम तिनके बचन हृदय प्रीति पहिंचानि।
बहुप्रकार धीरज दिये कहि कहि सिय प्रियबानि॥

गीतिकाछंद॥ तब जानि प्रभु रुख लषण लोगन बिपिन मग पूँछत भयो। सुनि नारिनर भय सकल ब्याकुल मलिन मन आनँद गयो॥ मन समुझि कर्म प्रभाव अपने हृदय पुनि धीरजकिये। भगवन्त सादर शोधि मारग सुगम तिन तब कहि दिये॥

तब सिय लषण सहित रघुबीरा। चले बिपिन सानँद मतिधीरा॥
फेरे सबहि बचन मृदुभाखी। चले भवन रामहिं उररासी॥
बिरह बिषाद अधिक मन माहीं। कहत परसपर इमि सब जाहीं॥

कुण्डलिया॥ जानि न जाय बिरञ्चि गति निपट निठुर चित

जौन। भल अनभल भावै ज्यई बिन बिचार कर तौन ॥ बिन बि- चारकर तौन रूख सुरतरु ज्यहि कीन्हा। सागर कीन्ह्यों खार शशि हि अकलंक जु दीन्हा ॥ दीन्हा करि ज्यहि कञ्ज सहित कण्टक मृदु खानी। नीच धनिक बड़ रंक जाय बिधि गति नहिं जानी॥ दीन्हे बिधि जो पै इन्हैं दुखदायक बनबास । तौ कत कीन्हे श्रम बिपुल रचिरचि भोग बिलास ॥ रचिरचि भोग बिलास फिरहिं ये बिनुपद त्राना। नाहक कृत गज बाजि यान बिधि बाहननाना ॥ ये पौढ़हिं कुश डासि बादि मृदु सेजहि कीन्हे। बृथा रच्यो गृहवास इनहिं तरुतर जो दीन्हे॥ जो पै ये बन बिचरि नित कन्द मूलफल खाहिं। तौ बिधि अशन सुधादि बहु बादि रचे जगमाहिं ॥ बादि रचे जगमाहिं फिरत बनपट ये धारे। भूषण बसन अनूप बृथा बिरचे बिधि सारे॥ सारे सुख जगमाहिं बादि बिधि कीन्हे तापै। मनमोहन सुखधाम इनहिं दीन्हे बन जोपै ॥

दो॰ एक कहहिं ये सुठि सुभग आपु लीन अवतार।
अद्भुत रूप अनूप ये बिरचे नहिं करतार॥
देखहु खोजि त्रिलोक सब सुर नर नाग समेत।
सचराचर नरनारि महँ को अस प्रभा निकेत ॥

यहि बिधिसबमनकरहिं बिचारा। कहि न जाय उर प्रेम अपारा॥
राम लषण सिय कृपा निकेता। मगबासिन यहिबिधिसुखदेता॥
जाहिं चले बन सहज सुभाये। निज शोभा रति मदन लजाये॥
ज्यहिमग जाहिं निकरिद्वउभाई। त्यहि मग रहत मोद बहुछाई॥
खगमृग बृन्द निरखि चकिजाहीं। यकटक रहत देह सुधि नाहीं॥
नगर नगर अस आनँद श्राता। सीतासहित निरखि द्वउभ्राता॥
बिनुपदत्राण निरखि मग लोगू। कहत न ये रहैं कानन योगू॥